मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१६, अंक-०३ जून २०२६ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३२ मूल्य १००.०० रूपए

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

२३ जून २०२६

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

पधारो म्हारे देश
पहले-मातृभाषा फिर-राष्ट्रभाषा
मेरा राजस्थान
सम्पादक : बिजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ
मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना
भरतपुर
कोटा
जोधपुर
जैसलमेर
बीकानेर
चुरू
राजस्थान की राजधानी जयपुर
लक्ष्मणगढ़
नागौर
कुचामन
झुंझुनूँ
पाली
फतेहपुर
डीडवाना
रामगढ़
नवलगढ़
चिड़ावा
सिरोही
सरदारशहर
सीकर
रतनगढ़
लाडनूँ
जसवंतगढ़
बिसाऊ
केड
सुजानगढ़
ब्यावर
बिदासर
छोटीखाटू
तालछापर
सांभर
अजमेर
राजलदेसर
गंगाशहर
नोखा
देशनोक
काल
रतननगर
चित्तौड़गढ़
मण्डावा
मंड्रेला
नोहर
मेवाड़
दाँता-रामगढ़
सादड़ी
खुडाला
आमेट
पड़िहारा
रींछेड़
अलसीसर
श्रीमाधोपुर
डूण्डलोद
बगड़
लोसल
मुकुंदगढ़
शिशोदा
राजसमंद राजनगर
देवगढ़
सांडेराव
खिमेल
पिलानी
औद्योगिक नगरी रानी स्टेशन
सिंघाना
बिकानेर का श्रीडूंगरगढ़
बालोतरा
नापासर
मारवाड़ मूण्डवा
महनसर
उदासर
लूनकरनसर
उदयरामसर
चाड़वास
भीम
भीनासर
मोमासर
(रींणी) तारानगर
जसोल
भादरा
दड़ीबा
टमकोर
जालोर
भीनमाल
लाडनूँ
भोपालगढ़
पीपाड़ सिटी
मेड़ता सिटी
फलोदी
सांडवा
जैसलमेर
मेरा राजस्थान
सोजत
भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला
1 प्रति ₹ 100/-
जालोर
1 प्रति ₹ 100/-
के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय भारत!　　जय पश्चिम बंगाल!　　जय गौमाता!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

Supported By

Rajasthan Foundation

Kolkata Chapter

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

Powered By

Saraogi

Guruji

Sponsored By

MANTURAM GROUP

APRJ CONSTRUCTIONS Pvt. Ltd.

द्वारा आयोजित

28th JUNE 2026

AT Kolkata

We Meet at DHONO DHANYO Auditorium, Alipore

From 11A.M.

भारतीय सांस्कृतिक समागम

राष्ट्रमाता बनें

निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत का एक राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकात्ता' में स्थापित 'धनोधान्य' अलीपुर सभागार में २८ जून २०२६ रविवार को भव्यतिभव्य भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

मैं भारत हूँ

DHONO DHANYO

संरक्षक व मार्गदर्शक

स्वामी गोविंद देव गिरीजी महाराज

कोषाध्यक्ष

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र

Event By

anand Events • Experiences

गणगौर TELEVISION

Media Partner

सन्मार्ग खबरें अनेक सच्चाई एक sanmarg.in

sanmarg NETWORK

भव्यतिभव्य, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक कार्यक्रम के साथ B2B का आयोजन नृत्य, गीत, संगीत के साथ भारतीय व्यंजन का भी रहेगा संगम

अंतराष्ट्रीय पदाधिकारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, मुंबई मो. 9322307908	राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, कोलकाता मो. 8910628944	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा मो. 9414183919	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, कोलकाता मो. 9830224300	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुशीला पुगलिया, कोलकाता मो. 8617203712	अध्यक्ष राजस्थान फाऊंडेशन संतोष कुमार पुरोहित, कोलकाता चैप्टर मो. 93228 66476
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, मुंबई मो. 81088435715	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री वर्षा मूँधड़ा, कोलकाता मो. 9874272916	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मंजू अग्रवाल, पुणे मो. 8806751782	संगठन मंत्री अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई मो. 9702205252	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक किशोर जैन, लंदन, यूके मो. 044 (770) 3827595	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका मो. 01(919)610-7106

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT'　　प्रवेश आमंत्रण कार्ड द्वारा　　गौमाता बनें राष्ट्रमाता

सदियों का इतिहास हमारा,
गौ-संवर्धन अपनाया है यह अर्थ,
धर्म और प्रकृति के, संतुलन का पैमाना है !!

Rajesh Kumar Agrawal
Mob. : 9830025556

Century Plyboards (I) Ltd

Century House, P15/1, Taratala Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat -700088
Ph. : 033 - 39403950 e-mail : rajesh@centuryply.com

CF-256, Salt Lake City, Sector-1, Near Tank Road No.6, Kolkata, West Bengal, Bharat - 700064
Ph. : 033 - 23586652

'मैं भारत हूँ' पत्रिका का आगामी विशेषांक

कानपुर

रांची

जुलाई २०२६

कानपुरः भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के 'कानपुर' नगर ज़िले में स्थित एक औद्योगिक महानगर है, यह नगर गंगा नदी के दक्षिण तट पर बसा हुआ है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ से ८० किलोमीटर पश्चिम स्थित यहाँ नगर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी के नाम से भी जाना जाता है, ऐतिहासिक और पौराणिक

रांची झारखंड की राजधानी रांची का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक अत्यंत समृद्ध है। इसे कभी 'अरची' या 'रिंची' नामक गाँव के रूप में जाना जाता था। यह शहर अपनी आदिवासी संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम और खनिज संपदा के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

१७ वें वर्ष में प्रवेश
मैं भारत हूँ
वर्ष -१६, अंक ०३, जून २०२६
वार्षिक मुल्य
रु.१२००/-
१२ अंकों का

बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: 9702205252
डॉ. अल्पना गंगवाल जैन
मो: 9369253113

● 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
● 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
UPI No:- 9322307908
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं
HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410
State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

चलते हैं नंदुरबार में मनाने महेश नवमी

महाराष्ट्र का एक और शहर 'नंदुरबार' कहते हैं प्रकृति अपना रंग विभिन्न तरीके से पृथ्वी पर बिखेरते ही रहती है, इस रंग में रंगा 'नंदुरबार' महाराष्ट्र का एक क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से भरा-पुरा, जिसका वर्णन प्रस्तुत अंक में आप सभी पढ़ेंगे, क्या और कैसा है नंदुरबार? विस्तृत जानकारी के साथ...

विश्व में फैले माहेश्वरी परिवारों का सबसे बड़ा पावन त्योहार इस वर्ष २०२६, २३ जून को 'महेश नवमी' मनाया जाने वाला है, हम सभी जानते हैं भगवान महेश व मां पार्वती के आशीर्वाद से माहेश्वरीयों का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल 'नवमी' के दिन हुआ था, इसीलिए विश्व में फैले माहेश्वरी 'महेश नवमी' के पावन त्यौहार को बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं। 'मैं भारत हूं' परिवार 'महेश नवमी' की विस्तृत जानकारी भी प्रस्तुत अंक में प्रकाशित करने का प्रयास किया है, मुझे विश्वास है कि 'मैं भारत हूं' के प्रबुद्ध पाठकों को अच्छा भी लगेगा और ज्ञानवर्धन भी होगा।

२८ जून २०२६, भारत का ही एक राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकाता' में मारवाड़ी समाज एक इतिहास लिखने जा रहा है, कहा जा सकता है कि 'कोलकाता' के इतिहास में पहली बार सभी मारवाड़ी समाज के संगठन एक मंच पर, कोलकाता के प्रवासी मारवाड़ियों को विश्वास भी नहीं हो रहा है कि क्या कभी ऐसा हो सकता है? लेकिन सचमुच कोलकाता के ही 'धनोधान्यो' ऑडिटोरियम में होने जा रहा है, बहुत भारी उत्साह है कोलकाता के प्रवासी मारवाड़ियों में और लोगों का कहना भी है कि हम सब धूमधाम से मारवाड़ी दिवस के रूप में 'भारतीय सांस्कृतिक समागम, 'भारतम' को मनाएंगे, झूमेंगे, गाएंगे और बताएंगे कि हम हैं मारवाड़ी!

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए', इंडिया नहीं, आह्वान को सफलता की मोहर भी लगेगी, साथ ही आयोजित भव्य कार्यक्रम में वर्तमान में बनी नई सरकार 'भारतीय जनता पार्टी' द्वारा पश्चिम बंगाल में गौमाता को 'राज्य माता' का दर्जा जरूर दिया जाएगा, ताकि भारत में बहुत ही जल्द गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिल जा सकेगा।

जय भारत!

SBI BANK
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को केवल भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

माहेश्वरी का संक्षिप्त इतिहास

खंडेलपुर (इसे खंडेलानगर और खंडिल्ल के नाम से भी उल्लेखित किया जाता है) नामक राज्य में सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा खड्गलसेन राज्य करता था, इसके राज्य में सारी प्रजा सुख और शांती से रहती थी, राजा धर्मावतार और प्रजाप्रेमी था, परन्तु राजा का कोई पुत्र नहीं था, खड्गलसेन इस बात को लेकर चिंतित रहता था कि पुत्र नहीं होने पर उत्तराधिकारी कौन होगा, खड्गलसेन की चिंता को जानकर मत्स्यराज ने परामर्श दिया कि आप पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाएं, इससे पुत्र की प्राप्ति होगी, राजा खड्गलसेन ने मंत्रियों से मंत्रणा कर धोसीगिरी से ऋषियों को ससम्मान आमंत्रित कर पुत्रेस्ठी यज्ञ कराया, पुत्रेष्टि यज्ञ के विधिपूर्वक पूर्ण होने पर यज्ञ से प्राप्त रख को राजा खड्गलसेन और महारानी को प्रसाद स्वरूप देते हुए ऋषियों ने आशीर्वाद दिया और साथ-साथ यह भी कहा कि तुम्हारा पुत्र बहुत पराक्रमी और चक्रवर्ती होगा, पर उसे १६ साल की उम्र तक उत्तर दिशा की ओर न जाने देना, अन्यथा आपकी अकाल मृत्यु होगी, कुछ समयोपरांत महारानी ने एक पुत्र को जन्म दिया, राजा ने पुत्र जन्म उत्सव बहुत ही हर्ष उल्लास से मनाया, उसका नाम सुजानसेन रखा, यथासमय उसकी शिक्षा प्रारम्भ की गई, थोड़े ही समय में वह राजकाज विद्या और शस्त्र विद्या में आगे बढ़ने लगा, तथासमय सुजानसेन का विवाह चन्द्रावती के साथ हुवा, दैवयोग से एक जैन मुनि खंडेलपुर आए, कुवर सुजान उनसे बहुत प्रभावित हुवा, उसने अनेको जैन मंदिर बनवाए और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार शुरू कर दिया।

ऋषियों द्वारा कही बात के अनुसार सुजानसेन को उत्तर दिशा में जाने नहीं दिया जाता था, लेकिन एक दिन राजकुंवर सुजानसेन ७२ उमरावों को लेकर हठपूर्वक जंगल में उत्तर दिशा की और चल दिया, उत्तर दिशा में सूर्य कुंड के पास जाकर देखा की वहाँ महर्षि पराशर की अगुवाई में सारस्वत, ग्वाला, गौतम, श्रृंगी और दाधीच ऋषि यज्ञ कर रहे हैं, वेद ध्वनि बोल रहे हैं, यह देख वह आगबबुला हो गया और क्रोधित होकर बोला इस दिशा में ऋषि-मुनि शिव की भक्ति करते है, यज्ञ करते हैं इसलिए पिताजी मुझे इधर आने से रोकते थे, उसने क्रोध में आकर उमरावों को आदेश दिया कि इसी समय यज्ञ का विध्वंस कर दो, यज्ञ सामग्री नष्ट कर दो और ऋषि-मुनियों के आश्रम नष्ट कर दो, राजकुमार की आज्ञा पालन के लिए आगे बढे उमरावों को देखकर ऋषि भी क्रोध में आ गए और उन्होंने श्राप दिया कि सब निष्प्राण बन जाओ, श्राप देते ही राजकुंवर सहित ७२ उमराव निष्प्राण, पत्थरवत बन गए, जब यह समाचार राजा खड्गलसेन ने सुना तो अपने प्राण तज दिए, राजा के साथ उनकी ८ रानियां सती हुई।

राजकुंवर की कुवरानी चन्द्रावती ७२ उमरावों की पत्नियों के सहित रुदन करती हुई उन्हीं ऋषियों की शरण में गई जिन्होंने इनके पतियों को श्राप दिया था, ये उन ऋषियों के चरणों में गिर पड़ी और और क्षमायाचना करते हुए श्राप वापस लेने की विनती की, तब ऋषियों ने उपाय बताया कि देवी पार्वती के कहने पर भगवान महेश्वर इनमें प्राणशक्ति प्रवाहित करेंगे तब ये पुनः जीवित व शुद्ध बुद्धि हो जायेंगे। महेश-पार्वती के शीघ्र प्रसन्नता का उपाय पूछने पर ऋषियों ने कहा कि यहाँ निकट ही एक गुफा है, वहाँ जाकर भगवान महेश का अष्टाक्षर मंत्र ॐ नमो महेश्वराय' का जाप करो। राजकुंवरानी सारी स्त्रियों सहित गुफा में गई और मंत्र तपस्या में लीन हो गई, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान महेशजी देवी पार्वती के साथ वहां आये, पार्वती ने इन जड़त्व मूर्तियों को देखा और अपनी अंतर्दृष्टि से इसके बारे में **शेष पृष्ठ ७ पर...**

पृष्ठ ६ से... जान लिया, महेश-पार्वती ने मंत्रजाप में लीन राजकुंवरानी एवं सभी उमरावों की स्त्रियों के सम्मुख आकर कहा कि तुम्हारी तपस्या देखकर हम अति प्रसन्न हुए हैं और तुम्हें वरदान देने के लिए आये हैं, वर मांगो! इस पर राजकुंवरानी ने देवी पार्वती से वर मांगा कि हम सभी के पति ऋषियों के श्राप से निष्प्राण हो गए है, अत: आप भगवान महेशजी से कहकर इनका श्रापमोचन करवायें। पार्वती ने तथास्तु कहा और भगवान महेशजी से प्रार्थना की, भगवान महेशजी ने सुजानसेन और सभी ७२ उमरावों में प्राणशक्ति प्रवाहित कर उन्हें चेतन (जीवित) कर दिया।

आदि महेशाचार्य महर्षि पराशर

चेतन अवस्था में आते ही सभी ने महेश-पार्वती का वंदन किया और अपने अपराध पर क्षमा याचना की, इस पर भगवान महेश ने कहा कि अपने क्षत्रित्व के मद में तुमने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग किया है, तुमसे यज्ञ में बाधा डालने का पाप हुआ है, इस प्रायश्चित के लिए अपने-अपने हथियारों को लेकर सूर्यकुंड में स्नान करो, ऐसा करते ही सभी उमरावों के हथियार पानी में गल गए, स्नान करने के उपरान्त सभी भगवान महेश-पार्वती की जय जयकार करने लगे, फिर भगवान महेशजी ने कहा कि सूर्यकुंड में स्नान करने से तुम्हारे सभी पापों का प्रायश्चित हो गया है तथा तुम्हारा क्षत्रित्व एवं पूर्व कर्म भी नष्ट हो गये हैं, यह तुम्हारा नया जीवन है इसलिए अब तुम्हारा नया वंश चलेगा, तुम्हारे वंश पर हमारी छाप रहेगी, देवी महेश्वरी (पार्वती) के द्वारा तुम्हारी पत्नियों को दिए वरदान के कारण तुम्हें नया जीवन मिला है इसलिए तुम्हे 'माहेश्वरी' के नाम से जाना जायेगा, तुम हमारी (महेश-पार्वती) संतान की तरह माने जाओगे, तुम दिव्य गुणों को धारण करने वाले होगे, द्यूत, मद्यपान और परस्त्रीगमन इन त्रिदोषों से मुक्त होगे, अब तुम्हारे लिए युद्धकर्म (जीवनयापन/उदरनिर्वाह के लिए योद्धा/सैनिक का कार्य करना) निषिद्ध (वर्जित) है, अब तुम अपने परिवार के जीवनयापन/उदर निर्वाह के लिए वाणिज्य कर्म करोगे, तुम इसमें खूब फलोगे-फुलोगे, जगत में धन-सम्पदा धनी के रूप में तुम्हारी पहचान होगी, धनी और दानी के नाम से तुम्हारी ख्याति होगी, श्रेष्ठ कहलावोगे (आगे चलकर श्रेष्ठ शब्द का अपभ्रंश होकर 'सेठ' कहा जाने लगा) तुम जो धन-अन्न-धान्य दान करोगे उसे मातभाग (माता का भाग) कहा जायेगा, इससे तुम्हारी बरकत होगी।

अब राजकुंवर और उमरावों में स्त्रियों (पत्नियों को) को स्वीकार करने को लेकर असमंजस दिखाई दिया, उन्होंने कहा कि हमारा नया जन्म हुआ है, हम तो ''माहेश्वरी'' बन गए है पर ये अभी क्षत्रानियां हैं, हम इन्हें कैसे स्वीकार करें, तब माता महेश्वरी ने कहा तुम सभी स्त्री-पुरुष हमारी (महेश-पार्वती) चार बार परिक्रमा करो, जो जिसकी पत्नी है उनसे गठबंधन हो जायेगा, इस पर राजकुंवरानी ने पार्वती से कहा कि- माते! पहले तो हमारे पति क्षत्रिय थे, हथियारबन्द थे तो हमारी और हमारे मान की रक्षा करते थे अब हमारे मान की रक्षा ये कैसे करेंगे, तब पार्वती ने सभी को दिव्य कट्यार (कटार) दी और कहा कि अब तुम्हारा कर्म युद्ध करना नहीं बल्कि वाणिज्य कार्य (व्यापार-उद्यम) करना है लेकिन अपनी स्त्रियों की और मान की रक्षा के लिए सदैव 'कट्यार' (कटार) को धारण करेंगे, मैं शक्तिस्वरुप स्वयं इसमें बिराजमान रहूंगी, तब सब ने महेश-पार्वती की चार बार परिक्रमा की, जो जिसकी पत्नी है उनका अपने आप गठबंधन हो गया (एक-दो जगह पर, १३ स्त्रियों द्वारा भी कट्यार धारण करके गठबंधन की परिक्रमा करने का उल्लेख मिलता है)।

सभी ने सपत्नीक महेश-पार्वती को प्रणाम किया, अपने नए जीवन के प्रति चिंतित, आशंकित माहेश्वरीयों को देखकर देवी महेश्वरी उन्हें भयमुक्त करने के लिए यह कहा कि- 'सर्वं खल्विदमेवाहं नान्यदस्ति सनातन'

'समस्त जगत मैं ही हूँ, इस सृष्टि में कुछ भी नहीं था तब भी मैं थी, मैं ही इस सृष्टि का आदि स्रोत हूँ, मैं सनातन हूँ, मैं ही परमब्रह्म, शेष पृष्ठ ८ पर...

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

सर्वे भवन्तु सुखिनः
Omprakash Kabra
Mob: 9825222882
Kabra And Kabra Sons
Group of Companies
2nd Floor, Super Market, Near New Bus Stand,
Sanala Road, Morbi - Gujarat, Bharat - 363641
Email : opkabra_2000@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ ७ से... परम-ज्योति, प्रणव-रूपिणी तथा युगल रूप धारिणी हूँ, मैं नित्य स्वरूपा एवं कार्य कारण रूपिणी हूं, मैं ही सब कुछ हूं, मुझसे अलग किसी का वजूद ही नहीं है, मेरे किये से ही सब कुछ होता है इसलिए तुम सब अपने मन को आशंकाओं से मुक्त कर दो' ऐसा कहकर देवी महेश्वरी ने सभी को दिव्यदृष्टि दी और अपने आदिशक्ति स्वरुप का दर्शन कराया, दिखाया की शिव ही शक्ति है और शक्ति ही शिव है।

'शिवस्याभ्यन्तरे शक्तिः शक्तेरभ्यन्तरेशिवः।'

शक्ति शिव में निहित है, शिव शक्ति में निहित है, शिव के बिना शक्ति का अथवा शक्ति के बिना शिव का कोई अस्तित्व ही नहीं हैं, शिव और शक्ति अर्थात महाकाल और महाकाली, महेश्वर और महेश्वरी, महादेव और महादेवी, महेश और पार्वती तो एक ही है, जो दो अलग-अलग रूपों में अलग-अलग कार्य करते हैं। महेश-पार्वती के सामंजस्य से ही यह सृष्टि संभव हुई, आदिशक्ति ने पलभर में अगणित (जिसको गिनना असंभव हो) ब्रह्मांडों का दर्शन करा दिया, जिसमें वह समस्त दिखा जो मनुष्य ने देखा या सुना हुआ है और वह भी दिखा जिसे मानव ने ना सुना है, ना देखा है, न ही कभी देख पाएगा और ना उनका वर्णन ही कर पाएगा, तत्पश्चात अर्धनर-नारीश्वर स्वरुप में शरीर के आधे भाग में महेश (शिव) और आधे भाग में पार्वती (शक्ति) का रूप दिखाकर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति (पालन), परिवर्तन और लय (संहार), महेश (शिव) एवं पार्वती (शक्ति) अर्थात् (संकल्पशक्ति और क्रियाशक्ति) के अधीन होने का बोध कराया। चामुण्डा स्वरुप का दर्शन कराया, जिसमें दिखाया गया है कि 'महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी' देवी महेश्वरी की ही तीन शक्तियां है जो बलशक्ति, ज्ञानशक्ति और ऐश्वर्यशक्ति (धनशक्ति) के रूप में अर्थात् इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति के रूप में कार्य करती है, जिसके फलस्वरूप सृष्टि के सञ्चालन का कार्य संपन्न हो रहा है, महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी इन्हीं त्रीशक्तियों का सम्मिलित/एकत्रित रूप है चामुण्डा जो स्वयं आदिशक्ति देवी महेश्वरी ही है, आगे महाकाली के नवदुर्गा और दसमहाविद्या तथा महालक्ष्मी की अंशशक्तियों अष्टलक्ष्मियों का दर्शन कराया, अंततः यह सभी शक्तियां मूल शक्ति (आदिशक्ति) देवी महेश्वरी में

खण्डेला गांव का महाभारतकालीन माँ चामुंडा का मंदिर

समाहित हो गई, तब आश्चर्यचकित, रोमांचित, भावविभोर होकर सभी ने सिर नवाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा कि- हे माते! आप ही जगतजननी हो, जगतमाता हो, आपकी महिमा अनंत है, आपके इस आदिशक्ति रूप को देखकर हमारा मन सभी चिन्ताओं, आशंकाओं से मुक्त हो गया है, हम अपने भीतर दिव्य चेतना, दिव्य ऊर्जा और प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। हे माते! आपकी जय हो। हम पर आपकी कृपा निरंतर बरसती रहे, देवी ने कहा, मेरा जो आदिशक्ति रूप तुमने देखा है उसे देख पाना अत्यंत दुर्लभ है, केवल अनन्य भक्ति के द्वारा ही मेरे इस आदिशक्ति रूप का साक्षात दर्शन किया जा सकता है, जो मनुष्य अपने सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को, मनोकामनाओं से मुक्त रहकर केवल मेरे प्रति समर्पित होता है, मेरे भक्ति में स्थित रहता है वह मनुष्य निश्चित रूप से मेरी कृपा को प्राप्त करता है, परम आनंद, परम सुख को प्राप्त करता है।

फिर भगवान महेशजी ने सुजानसेन को कहा कि अब तुम इनकी वंशावली रखने का कार्य करोगे, तुम्हे 'जागा' कहा जायेगा, तुम माहेश्वरीयों के वंश की जानकारी रखोगे, विवाह-सबन्ध जोड़ने में मदत करोगे और ये हर समय, यथा शक्ति द्रव्य देकर तुम्हारी मदत करेंगे, तत्पश्चात ऋषियों ने महेश-पार्वती को हाथ जोड़कर वंदन किया और भगवान महेशजी से कहा कि प्रभु इन्होंने हमारे यज्ञ का विध्वंस किया और आपने इन्हें श्राप मोचन (श्राप से मुक्त) कर दिया, इस पर भगवान महेशजी ने ऋषियों से कहा आपको इनका (माहेश्वरीयों का) गुरुपद देता हूँ, आज से आप माहेश्वरीयों के गुरु हो आपको 'गुरु महाराज' के नाम से जाना जायेगा, आपका दायित्व है कि आप इन सबको धर्म के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करते रहेंगे, भगवान महेशजी ने सभी माहेश्वरीयों को उपदेश दिया कि आज से यह ऋषि तुम्हारे गुरु हैं, आप इनके द्वारा अनुशाषित होगे, एक बार देवी पार्वती के जिज्ञासापूर्ण अनुरोध पर मैंने पार्वती को जो बताया था वह पुनः तुम्हें बताता हूँ- **शेष पृष्ठ ९ पर...**

महेश नवमी के पावन पर्व पर
आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
सर्वे भवन्तु सुखिनः
Manakchand Laxman Baheti
M.Com., F.C.A.
Mob: 9552451930
CA INDIA
M. L. BAHETI
CHARTERED ACCOUNTANT
3, Harihar Apartment 728/B, Sadashiv Peth, Kumathekar Road,
Opp. Sadashiv Peth Post Office, Pune, Maharashtra,
Bharat- 411030, mlbaheti1@hotmail.com

पृष्ठ ८ से... गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो गुरौ निष्ठा परं तपः। गुरोः परतरं नास्ति त्रिवारं कथयामि ते।।

अर्थात- 'गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म है, गुरु में निष्ठा ही परम तप है, गुरु से अधिक और कुछ नहीं है यह मैं तीन बार कहता हूँ, गुरु और गुरुतत्व को बताते हुए महेशजी ने कहा कि गुरु मात्र कोई व्यक्ति नहीं है अपितु गुरुत्व (गुरु-तत्व) तो व्यक्ति के ज्ञान में समाहित है, उसे वैभव, ऐश्वर्य, सौंदर्य अथवा आयु से नापा नहीं जा सकता, गुरु अंगुली पकड़कर मात्र नहीं चलाता, गुरु अपने ज्ञान से शिष्य का मार्ग प्रकाशित करता है, चलना शिष्य को ही पड़ता है, जैसे मैं और पार्वती अभिन्न हैं वैसे ही मैं और गुरुत्व (गुरु-तत्व) अभिन्न

महाभारत-कालीन १६ महा-जनपद जिनमें एक 'मत्स्य' भी है जिसका उल्लेख माहेश्वरी वंशोत्पत्ति कथा में आता है

है, इस तरह से गुरु व गुरुतत्व के बारे में बताने के पश्चात महेश भगवान पार्वतीजी सहित वहां से अंतर्ध्यान हो गये।

उमरावों के चेतन होने के शुभ समाचार को जानकर उनके सन्तानादि परिजन भी वहां पर आ गए, पूरा वृतांत सुनने के बाद ऋषियों के कहने पर उन सभी ने सूर्यकुंड में स्नान किया। ऋषियों ने:

'स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु, विद्याविवेककृतिकौशलसिद्धिरस्तु ।
ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु गुरुभक्ति रस्तु, वंशे सदैव भवतां हि सुदिव्यमस्तु ।।'

अर्थात्- 'आप सदैव आनंद से, कुशल से रहें तथा दीर्घ आयु प्राप्त करें। विद्या, विवेक तथा कार्यकुशलता में सिद्धि प्राप्त करें, ऐश्वर्य व सफलता को प्राप्त करें तथा गुरु भक्ति बनी रहे, आपका वंश सदैव तेजस्वी एवं दिव्य गुणों को धारण करनेवाला बना रहे' इस मंत्र का उच्चारण करते हुए सभी के हाथों में रक्षासूत्र (कलावा) बांधा और उज्वल भविष्य और कल्याण की कामना करते हुए आशीर्वाद दिए।

आसन मघासु मुनयः शासति युधिष्ठिरे नृपते ।
सूर्यस्थाने महेशकृपया जाता माहेश्वरी समुत्पत्तिः ।।

अर्थ- जब सप्तर्षि मघा नक्षत्र में थे, युधिष्ठिर राजा शासन करता था, सूर्य के स्थान पर अर्थात् राजस्थान प्रान्त के लोहार्गल में (लोहार्गल- जहाँ सूर्य अपनी पत्नी छाया के साथ निवास करते हैं, वह स्थान जो कि माहेश्वरीयों का वंशोत्पत्ति स्थान है) भगवान महेशजी की कृपा (वरदान) से माहेश्वरी की उत्पत्ति हुई (यह दिन युधिष्ठिर संवत ९ जेष्ट शुक्ल नवमी का दिन था, तभी से माहेश्वरी समाज 'जेष्ट शुक्ल नवमी' को 'महेश नवमी'' के नाम से, माहेश्वरी वंशोत्पत्ति दिन/माहेश्वरी स्थापना दिवस के रूप में बहुत धूम धाम से मनाते हैं। 'महेश नवमी' माहेश्वरी समाज का सबसे बड़ा त्यौहार है, सबसे बड़ा पर्व है।

माहेश्वरी वंशोत्पत्ति से सम्बंधित सन्दर्भ एवं तत्थ्य

१) वर्तमान राजस्थान का पहले किसी एक नाम का प्रयोग नहीं मिलता है, इसके भिन्न-भिन्न क्षेत्र अलग-अलग नामों से जाने जाते थे, ऐसा महाभारत तथा पौराणिक गाथाओं से प्रतीत होता है, वर्तमान अलवर एवं जयपुर तथा कुछ हिस्सा भरतपुर का भी इसमें शामिल है, 'मत्स राज्य' कहलाता था। मत्स्य राज्य की राजधानी विराटनगर थी, जिसको इस समय बैराठ कहते हैं, यह वही विराट नगर है जहाँ महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास व्यतीत किया था, माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में आया हुवा 'मत्स्यराज' का उल्लेख मत्स के राजा के लिए किया गया है।

२) माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में खण्डेलपुर राज्य का उल्लेख आता है। महाभारत काल में लगभग २६० जनपद (राज्य) होने का उल्लेख भारत के प्राचीन इतिहास में मिलता है, इनमें से जो बड़े और मुख्य जनपद थे इन्हें महा-जनपद कहा जाता था, कुरु, मत्स्य, गांधार आदि १६ महा-जनपदों का उल्लेख महाभारत में मिलता है। इनके अलावा जो छोटे जनपद थे, उनमें से कुछ जनपद तो ५ गावों के भी थे तो कुछेक जनपद मात्र एक गांव के भी होने की बात कही गयी है, इससे प्रतीत होता है कि माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में वर्णित 'खण्डेलपुर' जनपद भी इन जनपदों में से एक रहा होगा।

राजस्थान के प्राचीन इतिहास की यह जानकारी है की- **शेष पृष्ठ १० पर...**

पृष्ठ ९ से... 'खंडेला' राजस्थान स्थित एक प्राचीन स्थान है जो सीकर से २८ मील दूरी पर स्थित है, इसका प्राचीन नाम खंडिल्ल और खंडेलपुर था, यह जानकारी खण्डेलपुर के प्राचीनता की और उसके महाभारतकालीन अस्तित्व की पुष्टि करती है।

खंडेला से तीसरी शती ई. का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है और यहाँ अनेक प्राचीन मंदिरों के ध्वंसावशेष हैं। 'खंडेला सातवीं शती ई. तक शैवमत (शिव अर्थात भगवान महेश को माननेवाले जनसमूह) का एक मुख्य केंद्र था', यह जानकारी खण्डेलपुर और उसके महाभारतकालीन अस्तित्व की पुष्टि करती है और यहां पर सातवीं शती तक शिव (महेश) को माननेवाला समाज अर्थात् माहेश्वरी समाज के होने की भी पुष्टि करती है।

खंडेला में आदित्यनाग नामक राजा ने ६४४ ई. में अर्धनारीश्वर का एक मंदिर बनवाया था, इस मंदिर के ध्वंसावशेष से एक नया मंदिर बना, जो वर्तमान समय में 'खंडलेश्वर' के नाम से प्रसिद्ध है। ६४४ ई. में इस क्षेत्र में शिवलिंग या शिवपिंड की बजाय मूर्ति के रूप में अर्धनारीश्वर का मंदिर बनवाया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि उस समय इस क्षेत्र में 'शिव' की मूर्ति स्वरुप में पूजा करनेवालों का प्राबल्य था (हिमाचल के करसोगा घाटी के एक छोटे से ममेल नामक गांव में भी लगभग ५००० वर्ष से भी अधिक पुराना महाभारत-कालीन भगवान महादेव-पार्वती का एक मंदिर है,स्थानीय मान्यताओं के मुताबिक़ पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय इसी स्थान पर बिताया था, यह विश्व का सबसे प्राचीन इकलौता ऐसा मंदिर है, जहाँ पर भगवान महेश्वर और माता गौरी पार्वती की युगल मूर्ति स्थापित है, जिनके बारे में जनश्रुति है कि इनकी स्थापना भी पांडव काल में स्वयं पांचों पांडव भाइयों के द्वारा ही की गई थी, यह स्थान (भौगोलिक स्थान) और काल (समय) माहेश्वरी उत्पत्ति के स्थान और समय से मिलता है। मान्यता के अनुसार माहेश्वरी समाज में माहेश्वरी उत्पत्ति के समय से ही महेश-पार्वती को मूर्ति स्वरुप में पूजने की परंपरा है, तो यह बात खंडेला में महेश को माननेवाला समाज अर्थात माहेश्वरी समाज के होने की भी पुष्टि करती है।

सूर्यकुंड, लोहार्गल (राजस्थान)

महाभारत काल तक देवता धरती पर रहते थे, महाभारत के बाद सभी अपने-अपने धाम चले गए, कलयुग के प्रारंभ होने के बाद देवता बस विग्रह मूर्ति रूप में ही रह गए। अत: उनके विग्रहों (मूर्तियों) की पूजा की जाती है, तथ्य बताते हैं कि कलियुग के प्रारम्भ होने तक शिवाय 'शिव' के किसी भी अन्य देवी-देवता के विग्रह मूर्ति की ना स्थापना की जाती थी और ना ही पूजा। शिवलिंग के स्थापना तथा देवी के शक्तिपीठों के तथ्य जरूर मिलते हैं, जब माहेश्वरी वंशोत्पत्ति हुई तब माहेश्वरी जिस खण्डेलापुर में रहते थे उसी खण्डेलापुर में तीसरी शती ई. में स्थापित शिव की शारीरिक स्वरुपवाली मूर्ति जो की 'अर्धनारीश्वर' की थी का मिलना इस बात को स्पष्ट करता है कि माहेश्वरीयों में महेश-पार्वती की शारीरिक स्वरुपवाली मूर्ति की पूजा की जाती थी, संभवतः माहेश्वरी उत्पत्ति के समय पार्वती के दिखाए आदिशक्ति स्वरुप को ही ध्यान में रखकर यह मूर्ति बनाई गई हो, इसी खण्डेला में, माहेश्वरी वंशोत्पत्ति के कुछ ही समय उपरांत स्थापित देवी चामुण्डा का मंदिर भी है। महाभारत-कालीन यह मंदिर आज भी विद्यमान है और माहेश्वरीयों की माँ चामुंडा के प्रति भक्तिगाथा को बताते हुए अतीत की यादों को ताज़ा करता है।

३) माहेश्वरी वंशोत्पत्ति कथा में वर्णित खंडेला गांव पुरातन समय से लेकर अभी तक गोटे के काम के लिए जाना जाता हैं, भले ही आज के समय में माहेश्वरी समाज की स्त्रियों के वस्त्रों-परिधानों पर गोटे के काम का चलन कम हुआ है लेकिन पुराने समय में स्त्रियों के वस्त्रों-परिधानों पर परंपरागत रूप से गोटे के काम का काफी प्रचलन रहा है, कुछ बुजुर्ग महिलाओं ने बतायी जब कपड़ा पुराना हो जाता था तो उस पर से गोटा निकालकर जलाया जाता था तो उसमें से सोना और चांदी निकलती थी, यह बात भी माहेश्वरीयों के पूर्वज खंडेला के वासी (रहनेवाले) होने की पुष्टि करती है, साथ ही इस बात की भी पुष्टि होती है कि माहेश्वरी समाज धनि और संपन्न भी था।

४) कृष्ण-शिव (महेश) संग्राम- शिव ने राजा बलि के पुत्र बाणासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर और बाणासुर द्वारा वर मांगने पर उसे वरदान दिया था कि शिव स्वयं बाणासुर की रक्षा का दायित्व वहन करेंगे, बाणासुर को दिए वरदान के कारण भगवान शिव (महेश) ने, कृष्ण-बाणासुर शेष पृष्ठ ११ पर...

सदियों का इतिहास हमारा,
गौ-संवर्धन अपनाया है यह अर्थ,
धर्म और प्रकृति के, संतुलन का पैमाना है !!
महेश नवमी के पावन पर्व पर
आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
महाराष्ट्र शासन
शेखर मुंदडा
अध्यक्ष, महाराष्ट्र गोसेवा आयोग
(राज्यमंत्री)
9860755544
अध्यक्ष
माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल
mvpm Maheshwari Vidya Pracharak Mandal
कार्यालय : पशुसंवर्धन आयुक्तालय, 1ला मजला, स्पायसर कॉलेजच्या समोर, औंध-खडकी रोड, औंध, पुणे, भारत - 411067
020-29952665 / 29950909
cah.gosevaayog-mh@mah.gov.in
www.maharashtragosevaayog.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ १० से... युद्ध में बाणासुर के पक्ष में उतरकर बाणासुर को बचाने के लिए कृष्ण के साथ युद्ध किया था, इस प्रसंग में शिवपत्नी पार्वती का बाणासुर को बचाने के लिए कृष्ण और बाणासुर के मध्य में खड़ी होने का उल्लेख भी मिलता है। यह प्रसंग पुराणों में 'कृष्ण-शिव संग्राम' के नाम से जाना जाता है, इस प्रसंग में एक जगह वर्णन आता है कि- 'बाणासुर की कन्या उषा ने वन में शिव-पार्वती को रमण करते देखा तो वह भी कामविमोहित होकर प्रिय-मिलन की इच्छा करने लगी' इन बातों से यह सिद्ध होता है की कृष्ण के समय में, महाभारत काल में भगवान 'महेश और पार्वती' साकार रूप में पृथ्वी पर आया करते थे। माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति कथा के अनुसार- 'देवी पार्वती द्वारा भगवान महेश (शिव) से बिनती करने पर भगवान महेश ने निष्प्राण पड़े उमरावों को जीवित (चेतन) किया था' इससे इस बात को पुष्टि मिलती है कि माहेश्वरी उत्पत्ति कथा यह कपोलकल्पित कहानी नहीं बल्कि प्रमाणित इतिहास है, यथार्थ में ही माहेश्वरी समाज के संस्थापक/प्रवर्तक महेश-पार्वती है, स्वयं महेश-पार्वती द्वारा हमारे (माहेश्वरी) समाज की उत्पत्ति होना, हमारे समाज के लिए गौरव की बात है।

५) माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में सूर्यकुंड का उल्लेख आता है जो लोहार्गल (राजस्थान) में स्थित है, इसी कुण्ड और स्थान का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है- महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था, लेकिन जीत के बाद भी पांडव अपने पूर्वजों, सगे-संबंधियों की हत्या के पाप से चिंतित थे, इस पाप से मुक्ति दिलाने के लिए कृष्ण ने कई उपाय बताए, इनमें से एक उपाय ऐसा था जो काफी चौंकाने वाला था। भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि पाण्डव तीर्थयात्रा पर जाएं, हर तीर्थ पर पाण्डव अपने हथियारों को तीर्थ के जल से धोएं, जिस स्थान पर भीम की गदा गलकर पानी बन जाए, समझ लेना यह मुक्ति स्थान है, जिस तीर्थ स्थल में तुम्हारे हथियार पानी में गल जायेंगे वहीं तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, तुम्हारे पापों का प्रायश्चित्त हो जायेगा, भीम की गदा का पानी में घुल जाना संकेत होगा कि तुम्हारे पाप धुल गए। पाण्डव सालों साल तीर्थ यात्रा करते रहे, हर तीर्थ स्थान पर हथियारों को धोया लेकिन हर बार निराशा ही हाथ लगी, तीर्थ यात्रा करते-करते पांडव अरावली पर्वत पर स्थित सूर्यकुंड पर पहुंचे, यहां पहुंचकर पाण्डवों ने सूर्यकुंड में अपने हथियारों को धोया और चमत्कार हो गया, भीम की गदा के साथ-साथ युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव के हथियार भी गलकर पानी हो गए, इसके बाद इसी स्थान पर महेश-पार्वती की आराधना कर पांडवों ने मोक्ष की प्राप्ति की, यह वही स्थान है जहाँ इस घटना के कुछ समय पहले महेश-पार्वती के वरदान से माहेश्वरी वंशोत्पत्ति हुई थी, यह स्थान राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित है और 'तीर्थराज लोहार्गल' के नाम से विश्व प्रसिद्ध है।

६) कहीं-कहीं पर उल्लेख मिलता है कि सूर्यकुंड के जल में स्नान करने के पश्चात माहेश्वरी बनने के कारण, माहेश्वरीयों को जलवंश का (जलवंशी) कहा गया, जल को पानी भी कहा जाता है इसलिए तत्कालीन स्थानिक बोलीभाषा में माहेश्वरीयों को पानिक कहा गया, आगे चलकर पानिक का अपभ्रंश होकर पणिक कहा जाने लगा। भारत के प्राचीन इतिहास में व्यापारियों तथा व्यापारियों के संघ (समूह) को 'पणिक' कहे जाने के उल्लेख बहुतायत में मिलते हैं। पणिक को सामान्यतः सौदागरों (व्यापारियों) के रूप में जाना जाता है, कहा गया है कि पणिक कुशल व्यापारी होते थे, आगे चलकर पणिक से बनिक, बनिक से बनिया कहे जाने लगे, कुछ इतिहासकारों एवं भाषाविदों का मानना है कि इस तरह से अप्रत्यक्ष रूप से माहेश्वरी समाज का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में हुआ है। मध्यकाल में 'माहेश्वरी' शब्द का अपभ्रंश होकर कहीं-कहीं पर माहेश्वरीयों को 'मेसरी' भी कहा जाता था, मुगलकाल और उसके बाद माहेश्वरीयों को मारवाड़ी भी कहा जाने लगा लेकिन मारवाड़ी यह शब्द मात्र माहेश्वरीयों के लिए ही नहीं बल्कि राजस्थान से जो लोग, विशेषतः व्यापारी समाज के लोग अन्य प्रदेशों में गये, उन सभी के लिए प्रयुक्त किया गया है, इसी के चलते जैन, अग्रवाल आदि समाज के लोगों को भी मारवाड़ी कहा जाने लगा, यद्यपि पूरा राजस्थान मारवाड़ नहीं है, मारवाड़ राजस्थान प्रान्त का एक क्षेत्र है, वर्तमान समय में माहेश्वरी समाज-संगठनों के प्रयास से, माहेश्वरी वंशोत्पत्ति के समय भगवान महेशजी द्वारा दिए गए नाम 'माहेश्वरी' इसी नाम का प्रयोग करने को बढ़ावा मिला है।

चूँकि बौद्ध धर्म की तरह 'माहेश्वरी' नाम का प्रत्यक्ष उल्लेख प्राचीन इतिहास में नहीं मिलता है तो इसका एक कारण यह हो सकता **शेष पृष्ठ १२ पर...**

All Investment Services under one Roof
Shares
Mutual Funds
S I P
Fixed Deposits
Bonds
Life Insurance
Health Insurance
Alternative investment Funds (AIF)
Portfolio Management Services (PMS)
Start SIP in MUTUAL FUNDS Today

FUTURE PLUS FINSE₹V
Your Money Our Expertise
Office 1:
Loni- Sangamner Road, Loni Bk, Tal.Rahata, Dist. Ahilynagar 413 736
Yogesh Bihani 9422727422
Office 2:
Nagar Manmad Road, 1st Floor, Nakshatra Heights, Savedi Naka Rd, Above IDBI Bank, near Ilakshi Hyundai, Ahilyanagar, Maharashtra, Bharat- 414003
Swapnil Rakecha 9579031064

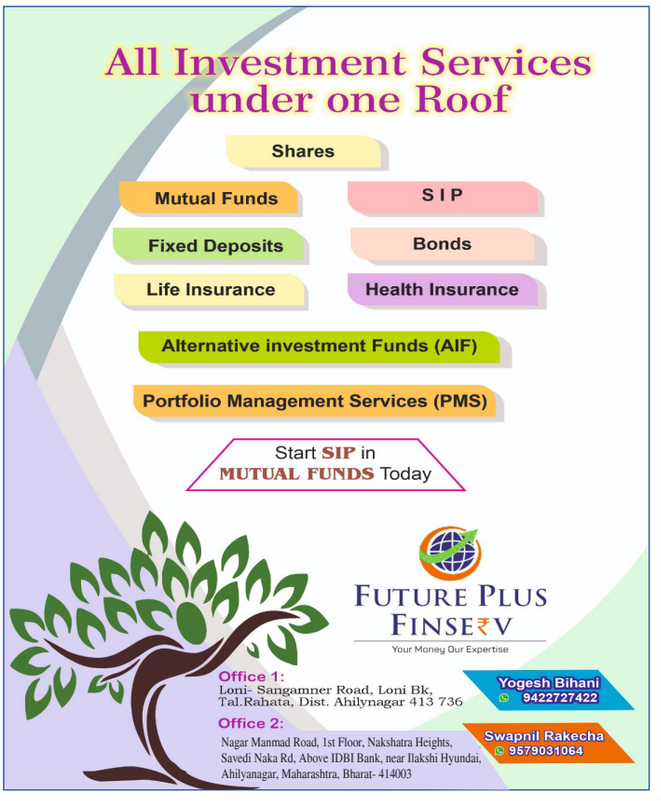

पृष्ठ ११ से... है कि पांच-छ सौ (५००-६००) लोगों के छोटे से समूह के किये इस बदलाव को बड़ी घटना ना मानते हुए महत्त्व नहीं दिया गया हो, इसका उल्लेख ना हुवा हो, प्राचीन इतिहास में 'माहेश्वरी' का उल्लेख नहीं मिलने की एक सम्भावना यह भी हो सकती है कि तत्कालीन समय में, चार वर्णों पर आधारित समाज व्यवस्था में क्षत्रिय और ब्राम्हण वर्ण का वर्चस्व हुवा करता था तो क्षत्रिय वर्ण को छोड़कर नया वंश बने माहेश्वरीयों को उन्होंने अनजाने में या जानबूझकर अनदेखा किया हो, देखने में आता है कि तत्कालीन समय में मुख्य रूप से राजवंशों का और कुछ हद तक ऋषि परंपरा का ही इतिहास लिखने की परंपरा थी। वैश्यों और क्षुद्रों का इतिहास नहीं लिखा जाता था। तत्कालीन समय के ग्रंथों में वाणिज्य अर्थात वैश्य कर्म में प्रवृत माहेश्वरीयों के नाम का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलने का एक कारण यह भी हो सकता है।

७) माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में ६ ऋषियों का और उनके नामों का उल्लेख मिलता है जिन्हें भगवान महेशजी ने माहेश्वरी समाज का गुरु बनाया था, इसी क्रम में आगे एक और ऋषि को गुरु पद दिया गया जिससे माहेश्वरी गुरुओं की संख्या ७ हो गई, महाभारत में उल्लेख मिलता है कि- 'महर्षि पराशर ने महाराजा युधिष्ठिर को 'शिव-महिमा' के विषय में अपना अनुभव बताया' महाभारत तथा तत्कालीन ग्रंथों में कई जगहों पर पराशर, भारद्वाज आदि ऋषियों का नामोल्लेख मिलता है जिससे इस बात की पुष्टि होती है की यह ऋषि (माहेश्वरी गुरु) महाभारतकालीन है और इस सन्दर्भ से इस बात की भी पुष्टि होती है कि माहेश्वरी वंशोत्पत्ती महाभारतकाल में हुई है।

उत्पत्ति कथा के आधार पर चल रही परम्पराएँ

१) माहेश्वरी उत्पत्ति कथा के सन्दर्भ के अनुसार ही मंगल कारज (विवाह) में बिन्दराजा मोड़ और कट्यार (कटार) धारण करके विवाह की विधियां संपन्न करता है तथा 'महेश-पार्वती' की तस्बीर को विधिपूर्वक स्थापन करके उनकी चार बार परिक्रमा करता है, इसे 'बारला फेरा' (बाहर के फेरे) कहा जाता है। माहेश्वरी वंशोत्पत्ति की वह बात याद रहे इसलिए चार फेरे बाहर के लिए जाते है (वर्तमान समय में 'महेश-पार्वती' की तसवीर की बजाय मामा फेरा के नाम से चार फेरे लेने का रिवाज भी कई बार देखा जाता है। लेकिन यह अनुचित है, सही परंपरा का पालन करते हुए 'महेश-पार्वती' की तसवीर को विधिपूर्वक स्थापन कर उनकी चार बार परिक्रमा करके ही यह विधि संपन्न की जानी चाहिए) विवाह की विधि में 'बारला फेरा' (बाहर के फेरे) लेने की विधि मात्र माहेश्वरी समाज में ही है, इस विधि का सम्बन्ध माहेश्वरी वंशोत्पत्ति से है, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी, परंपरागत रूप से माहेश्वरी समाज मनाता आया है अन्य किसी भी समाज में यह विधि (बारला फेरा/बाहर के फेरे) नहीं है।

२) अन्य एक परंपरा के अनुसार, सगाई में लड़की का पिता लडके को मोड़ और कट्यार भेंट देता है इसलिए कि ये बात याद रहे-'अब मेरी बेटी की और उसके मान की रक्षा तुम्हें करनी है' बिंदराजा को विवाह की विधि में वही मोड़ और कट्यार धारण करनी होती है (वर्तमान समय में इस परंपरा/विधि को भी लगभग गलत तरीके से निभाया जा रहा है, विवाह की विधि में धारण करने के लिए एक या दो दिन के लिए कट्यार किरायेपर लायी जा रही है। यह मूल विधि के साथ की जा रही अक्षम्य छेड़छाड़ है जो कि गलत है, इस विधि के मूल भावना को समझते हुए इसे मूल या पुरानी परंपरा से अनुसार ही निभाया जाना चाहिए)

३) माहेश्वरीयों को महेश-पार्वती ने साकार रूप में और वह भी पारिवारिक रूप में (सपत्नीक) दर्शन दिए थे इसीलिए माहेश्वरीयों में 'महेश-पार्वती' की साकार स्वरुप में (मूर्ति रूप में) भक्ति-पूजा-आराधना की जाती है, अकेले महेशजी की पूजा नहीं की जाती बल्कि एकसाथ महेश-पार्वती की भक्ति-पूजा-आराधना की परंपरा रही है, इसका तात्पर्य यह है की माहेश्वरीयों में शिवलिंग या शिवपिंड के बजाय मूर्ति स्वरुप में पूजने की परंपरा रही है। जाने-अनजाने में कुछ लोगों द्वारा यह प्रचारित किया गया कि महादेव की मूर्ति पूजा वर्जित है लेकिन यह सत्य नहीं है, शास्त्रों के अनुसार शिव ही एकमात्र देव है जो साकार और निराकार दोनों स्वरूपों में विराजित है और दोनों ही स्वरूपों में पूजनीय है। शिवलिंग और शिवपिंड शिव के निराकार स्वरुप का प्रतिक माने जाते हैं और शारीरिक रचना दर्शाती मूर्ति साकार स्वरुप का प्रतिक है, शिव के निराकार स्वरुप का प्रतिक होने के कारण शिवलिंग और शिवपिंड कितना भी खंडित होने पर भी पूजा जा सकता है लेकिन शिव-मूर्ति के खंडित होने पर वह पूजने के लिए वर्जित है, बस यही एकमात्र अंतर है। **शेष पृष्ठ १३ पर...**

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको
हार्दिक शुभकामनाएँ

Kailash Kabra
Proprietor
Mob : 9435012539 / 9435708017

R k kabra canvassing agents. Prop Ed
Edible oil broker

Kabra bhawan , 55 b r phookan road,
Gauwahati, Assam,
Bharat- 781009

Contact No. : 0361- 2600009, 2730309, 9864062600
email: Kabraghy@gmail.com

पृष्ठ १२ से... आमतौर पर भगवान शिव की पूजा शिवलिंग के रूप में की जाती है लेकिन भगवान महेश (शिव) की मूर्ति पूजन का भी अपना ही एक महत्व है। श्रीलिंग महापुराण में भगवान शिव की विभिन्न मूर्तियों के पूजन के बारे में बताया गया है, जैसे की कार्तिकेय के साथ भगवान शिव-पार्वती की मूर्ति की पूजा करने से मनुष्य की सभी कामनाएं पूरी हो जाती हैं, मनुष्य को सुख-सुविधा की सभी वस्तुएं प्राप्त होती हैं, सुख मिलता है, भगवान शिव की अर्द्धनारीश्वर मूर्ति की पूजा करने से अच्छी पत्नी और सुखी वैवाहिक जीवन की प्राप्ति होती है। माता पार्वती और भगवान शिव की बैल पर बैठी हुई मूर्ति की पूजा करने से, संतान पाने की इच्छा पूरी होती है, जो मनुष्य उपदेश देने वाली स्थिति में बैठे भगवान शिव की मूर्ति की पूजा करता है, उसे विद्या और ज्ञान की प्राप्ति होती है। नन्दी और माता पार्वती के साथ सभी गणों से घिरे हुए भगवान शिव की ऐसी मूर्ति की पूजा करने से मनुष्य को मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। शास्त्रानुसार शिव के निराकार स्वरुप (शिवलिंग या शिवपिंड) की पूजा-भक्ति करने से सांसारिक सुखों की नहीं बल्कि मात्र मोक्ष की प्राप्ति होती है इसी कारण से सांसारिक मोहमाया से दूर रहनेवाले साधु-सन्यासी शिवलिंग या शिवपिंड की पूजा-आराधना करते है। सांसारिक, भौतिक सुखों की चाह रखनेवालों तथा गृहस्थियों को शिव के साकार स्वरुप अर्थात मूर्ति की पूजा-आराधना करना ही उचित है जिससे सांसारिक और भौतिक सुखों (धन-धान्य-ऐश्वर्य आदि) के साथ ही अंत में मोक्ष (शिवधाम) भी प्राप्त होता है। मोक्षप्राप्ति की इच्छा से की जानेवाली पूजा-साधना में बेलपत्र चढाने की महिमा है तो सांसारिक और भौतिक सुखों की चाह से की जानेवाली पूजा में शमीपत्र चढाने का विधान है। धन-धान्यादि ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु गणेशजी को भी शमीपत्र चढाने का विधान शास्त्रों में बताया गया है।

४) प्राचीनकाल में शुभ प्रसंगों में तथा प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन गुरु अपने शिष्यों के हाथ पर, पुजारी और पुरोहित अपने यजमानों के हाथ पर एक सूत्र बांधते थे जिसे रक्षासूत्र कहा जाता था इसे ही आगे चलकर राखी कहा जाने लगा, वर्तमान समय में भी रक्षासूत्र बांधने की इस परंपरा का पालन हो रहा है, आम तौर पर यह रक्षा सूत्र बांधते हुए ब्राम्हण 'येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।' यह मंत्र कहते हैं जिसका अर्थ है- 'दानवों के महाबली राजा बलि जिससे बांधे गए थे, उसी से तुम्हें बांधता हूं। हे रक्षे! (रक्षासूत्र) तुम चलायमान न हो, चलायमान न हो।' लेकिन तत्थ्य बताते हैं कि माहेश्वरी समाज में रक्षासूत्र बांधते समय जो मंत्र कहा जाता था वह है-

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु, विद्याविवेककृतिकौशलसिद्धिरस्तु। ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु गुरुभक्ति रस्तु, वंशे सदैव भवतां हि सुदिव्यमस्तु।। (अर्थ- आप सदैव आनंद से, कुशल से रहें तथा दीर्घ आयु प्राप्त करें, विद्या, विवेक तथा कार्यकुशलता में सिद्धि प्राप्त करें, ऐश्वर्य व सफलता को प्राप्त करें तथा गुरु भक्ति बनी रहे, आपका वंश सदैव दिव्य गुणों को धारण करनेवाला बना रहे।) इसका सन्दर्भ भी माहेश्वरी उत्पत्ति कथा से है, माहेश्वरी उत्पत्ति कथा में वर्णित कथानुसार, निष्प्राण पड़े हुए उमरावों में प्राण प्रवाहित करने और उन्हें उपदेश देने के बाद महेश-पार्वती अंतर्ध्यान हो गये, उसके पश्चात ऋषियों ने सभी को 'स्वत्यस्तु ते कुशल्मस्तु चिरयुरस्तु....' मंत्र कहते हुए रक्षासूत्र बांधा था। यह रक्षामंत्र भी मात्र माहेश्वरी समाज में ही प्रचलित था/है। गुरु परंपरा के ना रहने से तथा माहेश्वरी संस्कृति के प्रति समाज की अनास्था के कारण यह रक्षामंत्र लगभग विस्मृत हो चला है।

वर्तमान समय में, नवनिर्मित वास्तु की 'वास्तुशान्ति' पूजाविधि में इसी 'स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु....' मंत्र का प्रयोग (कुछ मामूली बदलावों के साथ) किया जा रहा है, इससे इतना तो प्रतीत होता ही है कि यह मंत्र नवनिर्माण, नवनिर्मिति से सम्बंधित है, इससे माहेश्वरी वंशोत्पत्ति के समय गुरुओं द्वारा रक्षासूत्र बांधते समय इस मंत्र को कहे जाने के महात्म्य की, इस मंत्र के प्राचीनता की तथा इस मंत्र के माहेश्वरीयों से सम्बंधित होने की पुष्टि होती है।

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
Vinod Rathi
Since 1973
Mob: 94224 03696
हिरामोती

❇ Exclusive Kids Readymade
❇ Baby care Hosiery
❇ School & College Uniforms
Kasat Market, Powai Naka, Near Wellness Medical,
Behind Navrang Shop, Powai Naka, Satara, Bharat- 415002

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
स्वप्नील सुरेश भुतडा
मो: 9421670145
सुशिल सुरेश भुतडा
मो: 7588196032
श्री. बालाजी
ॲग्रो सर्व्हिसेस
ISI
* अधिकृत विक्रेते *
* लाडा लक्ष्मी पंम्स
* जयस्टार पंम्स
* लुबी पंम्स
सुप्रीम पी. व्ही. सी. पाईप व फिटिंग, गोदावरी एचडीपीई, प्रोटॉन इ. मोटर्स लाडा लक्ष्मी पंम्स, जय स्टार पंम्पस, वॉटर फ्लो पंम्स. सोना ड्रिप ॲण्ड स्पिंकलर, जॉय स्टार पंप
मेन रोड, करमाड, संभाजीनगर, भारत- 431007
फोन: 02402623311 मो. 9422714604

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

विश्व की सर्वोच्च शक्ति - मातृ शक्ति

⇨नर व नारायण की जननी है।
⇨सृष्टि की मूलाधार-सृष्टि का संतुलन नारी की मातृसत्ता पर ही निर्भर करता है, मां सृष्टि का प्रारंभ है, आदि शक्ति है।
⇨भारतीय संस्कृति की आधार शिला है, जैसी माता वैसी संतान, जैसी भूमि वैसी उपज।
⇨मां संतति परंपरा की जननी है, मानवता की जननी है- मातृ धारा को प्रवाहित करती है, जिस प्रकार भगवान शेषनाग के सहस्त्र फणों पर यह धरती टिकी हुई है, उसी प्रकार समग्र मानव जाति की मानवता केवल मां पर टिकी हुई है।
⇨मां से जग बना है जग से मां नहीं।
⇨मां रचती है रची नहीं जाती।
⇨मां देवहुती ने अपनी मातृ-महिमा से कपिल मुनी को जन्म देकर कर्दम ऋषि को जगत पिता ब्रह्माजी का पिता बनाया।
⇨भगवान को पृथ्वी पर अवतरित करनेवाली मां अदिती, देवहुति यथोदा, कौसल्या, त्रिशला व अनुसुया।
⇨सर्वदा सर्व हितकारिणी मां अपनी संतति के कल्याणार्थ अपने प्राणों का मोह भी त्याग देती है।
⇨मां के लिए उसकी संतान आशा है, भविष्य है, स्वप्न है, साक्षात प्रभु है और बच्चे के लिए मां भगवान।
⇨विपत्ति आने पर देवता भी मां (दुर्गा) की शरण में आते हैं।
⇨मां की गोद बच्चे की पहली गोद होती है, पहला पायदान मां ही देती है।
⇨मां का संबध नैशर्गिक है-शिशु मां का ही विस्तार है।
⇨मां विपदा हरने वाली है विपदा आने पर मां बच्चे की ढाल बन जाती है।
⇨मां से ही बच्चे का भावनात्मक विकास होता है।
⇨मां का ममत्व मातृत्व अनश्वर है, मां का प्यार बुढ़ा नहीं होता तथा पतझड़ स्पर्श नहीं करता।
⇨मां के चरणों में स्वर्ग का द्वार है।
⇨मां नैतिक संस्कारों की बुनियाद है।
⇨मां बच्चे की साइक्लोजी (मनोभावना) बखूबी समझती है।
⇨सार्वभौमिक सर्वकालिक विश्व जन्या, हितेषणी मां की झोली में भगवान ने वरदान ही वरदान भरे हैं, उसके विशाल हृदय से स्नेह के फूल ही झड़ेगें।
⇨मां की सकुनभरी ठंडी हथेली सिर पर रखने से बच्चे को अनंत शांति सकुन व निश्चिंतता प्राप्त होती है।
⇨मां के स्नेहांचल की शीतल छाया से श्रांत क्लांत संसार विश्राम करता है।
⇨मां ममता की प्रतिमूर्ति, प्रेम की साकार मूर्ति, करुणामयी, वात्सल्यमयी शक्ति, सौंदर्यमयी मां, श्री, चिति, मान्या, पूज्य, आराधभक्ति, माता, श्रद्धा, प्रेम द्रवी भूता विश्वातीत।
⇨हिंदी शब्द माला के २ लाख शब्दों में सबसे छोटा शब्द मां-ध्वनिगर्भी, अर्थधन, महिमामयी शब्द! एकाक्षरी शब्द मां!
⇨कुसुम की कोमलता, वज्र की कठोरता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता गंगा की पवित्रता, चांदनी की शीतलता।
⇨प्रपत्तिभाव- अनन्य शरण्यता
⇨तृषा: क्षुद्यार्ता: जननी स्मरन्ति, भुख प्यास पूर्ती के लिए माता को ही स्मरण करते हैं।
⇨नास्ति भातृसमंजस्य, नास्ति मातु परंतीर्थम-मां से बड़ा कोई देवता नही मां से बड़ा कोई तीर्थ नही।
⇨सत्य (अडिग) शिव (मांगलिक) एवं सुंदरम (मोहक) का अवतरण।
⇨मां प्यार का सागर है।
⇨मां हैं तो जहाँ है।
⇨मां संसार का सबसे पहला विश्वविद्यालय है।
⇨मां धात्री, जन्म दात्री, निमात्री, तीनों का रोल निभाती है।
⇨मां त्याग समर्पण सेवा की प्रतिमुर्ती है।
⇨मां घर की धुरी है।
⇨मातृत्व देवत्व से भी महान है।
⇨मां तीन बार जन्म लेती है।
⇨मां पुरुष व पौरुष की जननी है।
⇨संतती वत्सला मां लात मारते हुए शिशु को भी स्तन से अमृतपान कराती है।
⇨नारी का सर्वाधिक सुंदर और पूज्य रुप मां है।
⇨मां! जिसकी खुशी हमारी हंसी से है और दुःख हमारे गम में है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

गो-संस्कृति तिल घन्या नहीं, गाय पशु नहीं

माय कल्चर, इज एग्रीकल्चर मेरी संस्कृति कृषि संस्कृति है। भारतीय जीवन दर्शन, कृषि जीवन दर्शन समान है, कृषि का आधार गोवंश रहा है, गोवंश देश का चेतन धन है, चेतन धन की रक्षा भारतीय संस्कृति का मंगला चरण है। जीवों की रक्षा, जीवों की सेवा अपने आप में स्वयं धर्म तो है ही और धर्म का मर्म भी है, पश्चिमी जगत के अनुसंधान कर्ताओं (वैज्ञानिकों) ने मनुष्य के बाह्य जीवन पर अत्यधिक अनुसंधान किये, उनका आधार मनुष्य देह है, हमारे ऋषि मुनि अनुसंधान कर्ताओं (वैज्ञानिकों) ने मनुष्य के आंतरिक जीवन पर अनुसंधान किये, पश्चिमी जगत् ने बाह्य सौंदर्य पर चिंतन किया, हमारे ऋषियों ने आंतरिक सौंदर्य का चिंतन किया। भौतिक चिंतन होने के कारण, पश्चिमी जगत का आधार देह और अर्थ हुआ, मनुष्य की बाह्र सुख सुविधाएँ, आकर्षक देह प्रदर्शन का माध्यम बनीं, हमारे यहाँ मन, बुद्धि, संयम, संस्कार, चरित्र, आहार, आचरण, एकात्मतत्व का चिंतन प्रधान हुआ, इसलिये सब जीवों में चेतन, जड़ में परमतत्व परमेश्वर का वास है, हम सब में समान आत्म तत्व है। पश्चिमी जगत् के लोग 'देहसंस्कृति' मानने वाले और हम 'देव संस्कृति के उपासक हुए, इसलिये जीवदया, जीवरक्षा, मनुष्य का मौलिक गुण प्रस्थापित हुआ, पश्चिम के जगत में अर्थ प्राप्ति के लिए पशु हत्या कारण बना। पश्चिमी जगत के अंधानुकरण एवं विधर्मी मान्यता का प्रभाव हमारे देश में जीवों की हत्या का कारण बना।

भारत की संस्कृति मूलतः गो संस्कृति है। 'भारत' की संपन्नता भारतीयों को उदार बनाती है। भारत की प्राकृक्तिकर्ता भरत वंशियों को पूर्ण जीवन दर्शन का आचरण सिखलाती है। 'भारत' की कृषि भारतीयों को पुनर्जन्म का सिद्धांत समझाती है, 'भारत' की गाय हमें आध्यात्म का पाठ पढ़ाती है। 'भारत' की सरिताओं का कल-कल कर हिमालय से सागर में मिलना भारतीयों को समष्टि हित समर्पण का ज्ञान कराती है। भारतीय समाज ने 'गाय' को 'माँ' की संज्ञा से पुकारा है। तिलम् न वान्यम् पशुवः न गावः तिल धान्य नहीं है, गाय पशु नहीं है। गाय के प्रादुर्भाव की कथा समुद्र मंथन से प्रारंभ होती है। समुद्र मंथन से चौदह रत्न प्रकट हुए उनमें तीन प्राणी रत्न हैं। सात सूंड वाला श्वेत पैरावत हाथी, सप्तमुखी उच्चैश्रवाः घोड़ा और कामधेनु रूपी पाँच गोमाताएँ प्रकट हुईं। नंदा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला, बहुला, इन पाँचों गोमाताओं की सेवा हेतु पंच ऋषियों ने इन्हें प्राप्त किया यानी जमदग्नि, भारद्वाज, वशिष्ठ, असित, गौतम।

भगवान शंकर का वाहन नंदी, भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) का पहचान चिह्न वृषभ (बैल), भगवान दत्तात्रेय व गोपाल कृष्ण के साथ गाय, माता दुर्गा के नौ रूपों में शैलपुत्री और गौरी का वाहन गाय, जमिया माता का वाहन गाय, वैतरणी नदी पार कराने का माध्यम गाय, उत्खनन में प्राप्त सिक्कों पर बैल/नंदी, राष्ट्रीय चिह्न, तीन मुंह के सिंह के नीचे बैल, गोबर के गोवर्धनजी बनाकर पूजन, गोपाष्टमी, वत्सद्वादशी, दीपावली पर गाय-बैलों का श्रृंगार-गो उत्सवों की परम्परा भारत की गोवंश संस्कृति को प्रकट करता है। गोवंश का पूजन गाय के प्रति हमारी आस्था को प्रकट करता है। देव प्रतिमाओं की उद्गाता हमारी प्रिय गोमाता ही है। सम्राट विक्रमादित्य को श्रीराम जन्म भूमि खोज के समय प्रयागराज से भेंट होने पर प्रयागराज ने बताया कि जिस स्थान पर गोमाता चारों थनों के दूध से अभिषेक करती है वही राम जन्मभूमि है। यह संकेत मिलने पर विक्रमादित्य को इसी मंगल क्षण की प्रतीक्षा थी। गोधूलि बेला के समय गाय ने अपने दूध से जिस स्थान का अभिषेक किया, वहीं खुदाई करने पर विक्रमादित्य को राम जन्मभूमि रूपी लघु मंदिर प्राप्त हुआ था। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा (श्री महावीर जी राजस्थान में) गोमाता के दुग्ध से ही प्रकट हुई थी।

श्री नाथद्वारा जी में प्रस्थापित श्रीनाथजी की प्रतिमा, जतीपुरा ग्राम (वृंदावन) में सदु पाण्डे जी की गाय के माध्यम से महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी के मार्गदर्शन में खुदाई में प्राप्त हुई। तिरूपति बालाजी की प्रतिमा भी गाय ने ही प्रकट की है। सूरत (गुजरात) में कांतारेश्वर का शिवलिंग, जोधपुर के समीप मेड़ता भक्तिमयी मीराजी की जन्म स्थलि में भगवान चारभुजानाथ की प्रतिमा, वृंदावन में श्री गोविन्द जी की प्रतिमा, गाजियाबाद में दूधेश्वर महादेव, भगवान एकलिंग जी की प्रत्तिमा गोदुग्ध की धारा के माध्यम से प्रकट हुई है। प्रातः गो-दर्शन मंगल दर्शन है, नगर ग्राम में प्रवेश के समय गो-दर्शन शुभशगुन माना जाता है।

भारतवर्ष में गोपुरी, गोहाटी, गोरखपुर, गोवा, गोधरा, गोंदिया, गोपुरम्, गोपाल, गोविंद, गोवर्धन, गौतम, गोकुल, गोमुख, गोकर्ण, गोधाम, गोलोक, गोखरू, गोधा, गोयल, गोचर, गोरोचन, गोरज, गोधूलि. गोदान, गोग्रास जैसे सहस्त्रों शब्द 'गो' से बने होने से हमारी संस्कृति का गाय के प्रति कितना लगाव है, यह प्रकट करता है। 'गोचर' शब्द का अर्थ गाय के चरने से है। गाय कभी भी तृण (घास) को मूल से उखाड़ कर नहीं खाती, मात्र पत्तियाँ ही खाती हैं, ताकि मूल (जड़) की रक्षा हो सके। श्वेतम्बर जैन साधु-साध्वियों भी पांच परिवारों से गोचरी ग्रहण करते हैं, यहाँ भी वही भाव प्रकट होता है। यज्ञ का आधार भी गोघृत ही है। गोमय (गोबर) से लेपन कर पूजन के स्थान को पवित्र किया जाता है। पंचामृत यज्ञ के प्रसाद का स्वरूप है। गोदुग्ध, गोघृत, गोमूत्र, गोमय, गोदधि पंचामृत के आधार हैं और इन्हीं पांचों का विशेष अनुपात में मिश्रण पंचगव्य कहलाता है, जो आयुर्वेद का एक विशिष्ट अंग है। यज्ञ ही पर्जन्य, **शेष पृष्ठ १६ पर...**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ १५ से... बादल, वृष्टि का आधार है।

यक्ष गीता में यक्ष प्रश्न 'किं अमृतम् अमृत क्या है? युधिष्ठिर 'गवामृतम' गो दुग्ध ही अमृत है अर्थात धरती पर गोदुग्ध ही साक्षात अमृत है। दिगम्बर जैनाचार्य पूज्य विद्यासागर जी महाराज हमें बताते हैं कि षट्खण्डागम (धवला) नामक ग्रंथ में चार शब्दों में कविता का निर्माण किया गया है:

।। या श्रीः सा गौः ।। अर्थात 'इस धरा पर गाय ही साक्षात लक्ष्मी है। श्रीमद् भगवद गीता, अध्याय अठारह 'कृषि गौरक्ष्य वाणिज्यम्, वैश्यकर्म स्वभावजम खेती करना, गोपालन रक्षण, क्रय-विक्रय ही वैश्य का स्वभाविक कर्म है।

किं स्वित् सूर्यसमं ज्योतिः किं समुद्र सम सरः।
किं स्वित् पृथिव्यै वर्षीया कस्य मात्रा न विद्यते ।।
ब्रह्मासूर्य समं ज्योतिः द्यौ समुद समं सरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ।।

यजुर्वेद

सूर्य के समान ज्योति किसकी है? समुद्र के समान दूसरा सरोवर क्या है? पृथ्वी से भी अधिक ऐश्वर्य किसका है? ऐसा क्या है जिसकी सीमा नहीं है, अथवा जिसकी तुलना में कुछ भी नहीं है। ब्रह्म की ज्योति सूर्य के समान है। समुद्र के समान दूसरा सरोवर महान् अंतरिक्ष है, पृथ्वी से भी अधिक ऐश्वर्य भगवान इंद्र के पास है, गाय की तुलना में संसार में कुछ भी नहीं है, गाय अद्वितीया है, अतुलनीया है और अनुपमेया है।

'गावो भगः गाव इन्द्रो मेंइच्छात् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः । ।। अथर्ववेद ।।
इमा या गावः स जना स इन्द्र इच्छामीद हृदा मनसा चिदिन्द्रम् ।।

गाय मेरा ऐश्वर्य है, गाय मेरा इन्द्र भगवान है, जिसके पास संसार का समग्र ऐश्वर्य है। गाय सोम (अमृत) का पहला ग्रास है, ये जो गाये हैं, वह साक्षात इन्द्र है अथवा जिनके पास ऐसी गउएँ हैं वह तो साक्षात इन्द्र ही हैं, मैं ऐसे चेतन इन्द्र की हृदय से, मन से चाहना करता हूँ, इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ नहीं चाहिये, तात्पर्य यह कि गाय प्रार्थनायें सुनती, समझती हैं. इतना ही नहीं हमारे मनोभावों को भी भली प्रकार जानती, समझती हैं। जैनाचार्य हमें बताते हैं कि प्रायश्चित् शास्त्र (ग्रंथ) में स्पष्ट निर्देश है कि मनुष्य से कोई अक्षम्य अपराध हो जाये, तब गोमाता के कान में अपने से हुए अपराध को प्रायश्चित के लिए प्रार्थना करें, तब गौमाता स्वप्न में ही प्रायश्चित का मार्ग बतलाती हैं।

तीर्थंकर महावीर के काल में श्रावस्ती के परिक्षेत्र में जैन श्रावक ५३ गोकुलों का पालन करते थे, दस हजार गायें जहाँ रहती थीं, वह एक गोकुल कहलाता था। आनंद ने तीर्थंकर महावीर से आक लिया, तब आठ गोकुल पालने की शपथ ली थी, जिस गोपालक के पास पांच लाख गाये हैं वह उपनंद, नौ लाख गायें है वह नंद, दस लाख गायें हैं वह वृष्भानु, पचास लाख गाये हैं वह वृषभानुवर, एक करोड़ गायें हैं वह नन्दराजा कहलाते थे। गोलोक पारसी समाज में सफेद बैल वरसियाजी के नाम विख्यात है, पारसी समाज की वरसियाजी के प्रति बहुत पवित्र मान्यता है, जिन्हें प्रतिदिन फल खिलाये जाते हैं। वरसियाजी पूर्णरूपेण शुभ्र (सफेद रंग, एक बिन्दु भी काला नहीं, सींग से पूँछ तक खुर व भवें भी सफेद होती हैं)। इनके दर्शन पारसी मंदिर में किये जा सकते हैं (जैसे उदवाड़ा (सूरत), मुम्बई लालबाग व कामा बाग में)। स्वामी नारायण पंथ में भी 'धवल' गाय के प्रत्ति अत्यधिक श्रद्धा आज भी दृढ़ है, गोमाता जिस स्थान पर रहती हैं, वहाँ 'वास्तुदोष नहीं रहता, यह शाश्वत मान्यता आज विद्यमान है, पृथ्वी वसुन्धरा कहलाती है, सब प्रकार की संपत्ति उसके पेट से निकलती है, उसी प्रकार गाय भी मनुष्य को समस्त संपत्तियाँ प्रदान करती है, अतः पृथ्वी और गाय एक रूपा है, हमारे लिए समान पूज्या है, गाय की प्रदक्षिणा पृथ्वी की प्रदक्षिणा है। नंदिनी गोमाता की कृपा से ही राजा दिलीप को संतान प्राप्ति हुई, इसी से रघुवंश प्रारम्भ हुआ और उसी के अग्रक्रम में राष्ट्र नायक श्रीराम का जन्म हुआ।

'विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार' साक्षात् श्री परमेश्वर के अवतार का माध्यम भी गाय ही है।

'यही देहु, आज्ञा तुर्क गाडै खपाउं। गउ घात का दोष जग सिउ मिटाउं ।।'

गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज का उक्त गोरक्षा का सकल्प हम सब की प्रेरणा है। मनुष्य की मृत्यु हो जाने पर शव को उठाकर गाय के गोबर से लिपे हुए स्थान पर रखने से शव में आए हुए संक्रामक विषाणुओं का प्रभाव परिजनों पर नहीं होता, शव यात्रा के समय भी गाय के गोबर के कण्डे जलाकर आगे व्यक्ति चलता है, जिसके कारण शव यात्रा में सम्मिलित लोगों पर भी संक्रामक विषाणुओं का आक्रमण नहीं होता, ग्रामीण भारतीय समाज में आज भी यह मान्यता विद्यमान है कि परिवार में त्यौहार/पर्व / उत्सव के दिन किसी परिजन की मृत्यु हो जाती है तो उस पर्व-त्यौहार का परिवार में मनाना बन्द हो जाता है। पुनः पर्व मनाना तब ही प्रारंभ होता है. जब परिवार में गाय का बच्चा उसी पर्व पर जन्म लेता है। 'गौमाता' ही बन्द हुए पर्व को खोलती हैं, आनन्द का पर्व है गौमाता। भारत की कृषि, भारत की संस्कृति-गौ संस्कृति' है। समृद्ध अर्थ तंत्र का आधार कृषि है, और समृद्ध कृषि का आधार समृद्ध गोवंश है। भारत का पर्यावरण, विज्ञान, आयुर्वेद, कृषि, अर्थ, धर्म और समाज का आधार हमारी प्रिय गाय है। परमेश्वर की अनुपम कृति 'गाय' है और इसी से हमारी संस्कृति गौ संस्कृति है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

नंदुरबार

नंदुरबार का इतिहास

'नंदुरबार' का इतिहास प्राचीन काल से ही बेहद समृद्ध और बहुआयामी रहा है, जिसे ऐतिहासिक रूप से राजा नंदराज के नाम पर 'नंदनगरी' और प्राचीन काल में 'रसिका' के नाम से जाना जाता था, यह क्षेत्र महाराष्ट्र के उत्तर-पश्चिमी कोने में स्थित है और मुख्य रूप से एक समृद्ध आदिवासी सांस्कृतिक विरासत और स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। 'नंदुरबार' के इतिहास को निम्नलिखित महत्वपूर्ण चरणों में समझा जा सकता है:

प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास नाम की उत्पत्ति: राजा नंदराज के शासन के कारण इसे 'नंदनगरी' कहा गया, एक अन्य मान्यता के अनुसार 'नंदार' का अर्थ कृषि उत्पादों का बाजार होता है।

प्रमुख राजवंश: इस क्षेत्र ने मौर्य, सातवाहन, राष्ट्रकूट, चालुक्य और यादव वंश जैसे महान भारतीय राजवंशों का शासन देखा है।

सेउनादेश और खानदेश: यादव राजा सेउंचन्द्र के शासनकाल में इस क्षेत्र को 'सेउनादेश' कहा जाता था, बाद में, जब यहाँ फारूकी राजाओं का नियंत्रण हुआ (जिन्हें 'खान' की उपाधि प्राप्त थी), तब इस पूरे क्षेत्र का नाम बदलकर 'खानदेश' पड़ गया।

मुगल और मराठा काल: दिल्ली सल्तनत और बहमनी वंश के बाद, सम्राट अकबर के काल में इसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया। मुगलों के पतन के बाद, वीर मराठों ने इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।

ब्रिटिश काल और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश नियंत्रण: वर्ष १८१८ में मराठा साम्राज्य के पतन के बाद 'नंदुरबार' अंग्रेजों के अधीन आ गया।

१९४२ का भारत छोड़ो आंदोलन: स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'नंदुरबार' में इतिहास की एक अत्यंत गौरवशाली और भावुक घटना घटी।

शहीद शिरीष कुमार: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, मात्र १५ वर्ष के एक स्थानीय स्कूली छात्र शिरीष कुमार मेहता ने ब्रिटिश पुलिस की बंदूकों के सामने तिरंगा थामे रखा और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, उनकी शहादत आज भी देश के युवाओं को प्रेरित करती है।

आधुनिक जिला गठन धुले से विभाजन: आजादी के बाद यह क्षेत्र लंबे समय तक धुले जिले (पहले पश्चिम खानदेश) का हिस्सा बना रहा। प्रशासनिक आवश्यकताओं और आदिवासी क्षेत्र के विकास को गति देने के लिए १ जुलाई १९९८ को 'धुले' जिले को विभाजित कर स्वतंत्र 'नंदुरबार' जिले का गठन किया गया।

प्रशासनिक विभाजन: वर्तमान में इस आदिवासी बहुल जिले में ६ तालुका शामिल हैं: नंदुरबार, नवापुर, शाहदा, तलोदा, अक्कलकुवा और अकरानी महल (धड़गांव)।

भारत में आधार कार्ड परियोजना की आधिकारिक शुरुआत २९ सितंबर २०१० को महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले से हुई थी। उस समय के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी ने गाँव की एक निवासी, रंजना सोनावाने को देश का पहला आधार कार्ड सौंपकर इस योजना की नींव रखी थी आधार कार्ड के बारे में मुख्य जानकारी:स्थापना और नोडल एजेंसी: आधार जारी करने के लिए भारत सरकार द्वारा जनवरी २००९ में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण की स्थापना की गई थी १थम भारतीय: नंदुरबार (महाराष्ट्र) की निवासी रंजना सोनावाने भारत की पहली आधार कार्ड धारक थीं।पहला प्रोजेक्ट: आधार प्रोजेक्ट की संकल्पना २००६ में बीपीएल परिवारों के लिए विशिष्ट पहचान के रूप में शुरू की गई थी, जिसे बाद में सभी नागरिकों के लिए विस्तृत किया गया

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

महाराष्ट्र के नंदुरबार तहसील

अक्कलकुवा

महाराष्ट्र के 'नंदुरबार' जिले का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राकृतिक रूप से समृद्ध तालुका है, यह क्षेत्र गुजरात राज्य की सीमा से सटा हुआ है और अपनी विशिष्ट भौगोलिक बनावट के लिए जाना जाता है।

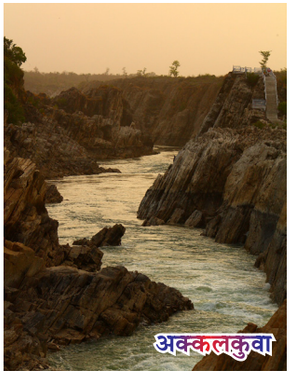

अक्कलकुवा

भौगोलिक स्थिति और प्रकृति सतपुड़ा की पहाड़ियाँ: यह तालुका सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के घने जंगलों और सुरम्य घाटियों के बीच बसा हुआ है।

नर्मदा नदी का सानिध्य: इसके उत्तर में नर्मदा नदी बहती है, सरदार सरोवर बांध का बैकवाटर क्षेत्र भी इस तालुका को छूता है।

कृषि और आजीविका पारंपरिक खेती: यहाँ पहाड़ी और मैदानी दोनों प्रकार की कृषि होती है। मुख्य रूप से मक्का, ज्वार, धान और दालें उगाई जाती हैं।

वन संपदा: यहाँ के स्थानीय लोग आजीविका के लिए महुआ, चारोली (चिरौंजी), बांस और शहद जैसी वनोपज पर निर्भर हैं।

शिक्षा और संस्कृति प्रमुख शैक्षणिक केंद्र: 'अक्कलकुवा' अपनी बड़ी शिक्षण संस्थाओं (जैसे 'जामिया इस्लामिया इशातुल उलूम') के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ देश-विदेश से छात्र चिकित्सा, तकनीकी और धार्मिक शिक्षा के लिए आते हैं।

समृद्ध आदिवासी विरासत: यहाँ भिल्ल और पावरा आदिवासी जनजातियों की बड़ी आबादी है, यहाँ का पारंपरिक रहन-सहन और लोक कलाएँ बहुत अनूठी हैं।

अक्राणी

मछिंद्रनाथ गुफा

जिसे मुख्य रूप से 'धडगाव' के नाम से जाना जाता है, 'नंदुरबार' जिले का सबसे दुर्गम, पहाड़ी और प्राकृतिक रूप से सबसे सुंदर तालुका है, यह क्षेत्र पूरी तरह से 'सतपुड़ा' पर्वत श्रृंखला के बीच बसा हुआ है और इसे 'नंदुरबार' जिले का 'कश्मीर' भी कहा जाता है। 'धडगाव' तालुका के बारे में मुख्य जानकारी इस प्रकार है:

तोरणमाल हिल स्टेशन जिले का मुख्य पर्यटन स्थल: नंदुरबार जिले का एकमात्र और प्रसिद्ध ठंडा हवा का स्थान (हिल स्टेशन) 'तोरणमाल' इसी तालुका में स्थित है।

प्रमुख आकर्षण: यहाँ की यशवंत झील, सीता खाई, कमल तालाब और मछिंद्रनाथ गुफा पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं।

यशवंत झील

भौगोलिक स्थिति और जीवनशैली सतपुड़ा की वादियां: यह तालुका ऊंचे पहाड़ों, गहरी घाटियों और घने जंगलों से घिरा हुआ है, यहाँ की जलवायु सालभर काफी ठंडी और सुखद रहती है।

आदिवासी संस्कृति: यहाँ पावरा और भिल्ल आदिवासी समुदाय की घनी आबादी है, यहाँ की पारंपरिक जीवनशैली, लोकनृत्य और भाषा आज भी अपने मूल रूप में संरक्षित हैं।

खेती और वनोपज: पहाड़ी ढलानों पर मक्का, ज्वार और उड़द की खेती होती है, साथ ही यहाँ के लोग महुआ, चारोली और औषधीय जड़ी-बूटियों जैसी वन संपदा पर निर्भर हैं।

'धडगाव घोडा बाजार' पारंपरिक व्यापार: 'धडगाव' अपने ऐतिहासिक घोड़ों के बाजार (हॉर्स मार्केट) के लिए भी जाना जाता है, शेष पृष्ठ १९ पर...

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध नंदुरबार के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Rakesh Agarwal
Mob: 9028181391

Gopal Rice Mill

Surat, Dhuliya Highway,
Near Jio Petrol Pump, Navapur, Nandurbar,
Maharashtra, Bharat- 425418

पृष्ठ १८ से... जहाँ आस-पास के राज्यों (गुजरात और मध्य प्रदेश) से लोग आते हैं।

तलोदा

'नंदुरबार' जिले का एक ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण तालुका 'सतपुड़ा' पर्वत की तलहटी में बसा यह क्षेत्र अपनी समृद्ध आदिवासी संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

तलोदा तालुका के बारे में मुख्य जानकारी इस प्रकार है:

कृषि और अर्थव्यवस्था उपजाऊ भूमिः तापी और गोमाई नदी घाटियों की उपजाऊ मिट्टी के कारण यहाँ बड़े पैमाने पर खेती होती है।

प्रमुख फसलें: यहाँ केला, कपास, गन्ना और पपीता प्रचुर मात्रा में उगाया जाता है, यहाँ का केला अन्य राज्यों में भी निर्यात किया जाता है।

पर्यटन और धार्मिक स्थल वलहेरी झरनाः मानसून के दौरान पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बनने वाला यह एक बेहद खूबसूरत झरना है।

अश्वत्थामा पहाड़ीः महाभारत काल के अश्वत्थामा के निवास की धार्मिक मान्यता के कारण महाशिवरात्रि पर यहाँ एक बड़ी यात्रा आयोजित होती है।

अस्तंबा शिखरः सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की यह एक पवित्र चोटी है, जहाँ हर साल दिवाली के समय एक बड़ा आदिवासी मेला लगता है।

नवापुर

'नंदुरबार' जिले का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तालुका (तहसील) और व्यापारिक शहर है, यह महाराष्ट्र और गुजरात राज्य की सीमा पर स्थित होने के कारण भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से अपनी एक अनोखी पहचान रखता है।

'नवापुर' तालुका से जुड़ी कुछ बेहद दिलचस्प और मुख्य जानकारियां: **अनोखा नवापुर रेलवे स्टेशनः**नवापुर का सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ का रेलवे स्टेशन है, जो भारत का एकमात्र ऐसा स्टेशन है जो दो राज्यों (महाराष्ट्र और गुजरात) की सीमा पर बंटा हुआ है जैसे कि स्टेशन की टिकट खिड़की महाराष्ट्र में पड़ती है, जबकि स्टेशन मास्टर का केबिन गुजरात में है, इस स्टेशन पर एक ऐसी बेंच (सीट) भी है, जिसका आधा हिस्सा महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में और आधा हिस्सा गुजरात के तापी जिले में आता है। पर्यटकों के लिए यह एक लोकप्रिय सेल्फी पॉइंट है। यहाँ ट्रेन की घोषणाएं चार भाषाओं (मराठी, गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी) में की जाती हैं।

मुख्य सांख्यिकी कुल जनसंख्या: नवापुर नगर परिषद क्षेत्र की जनसंख्या लगभग ३४,२०७ है, जबकि पूरे ग्रामीण तालुका की आबादी २.३ लाख से अधिक है।गांवों की संख्या: इस तालुका के अंतर्गत लगभग १५६ गांव आते हैं।

अर्थव्यवस्था और कृषि पोल्ट्री फार्मिंगः नवापुर को बड़े पैमाने पर कुक्कुट पालन के लिए जाना जाता है, यहाँ से अंडों और चिकन की सप्लाई गुजरात और महाराष्ट्र के कई बड़े शहरों में होती है।

कृषिः यहाँ की प्रमुख फसलों में तुअर दाल, विशेष लाल मिर्च, कपास और गन्ना शामिल हैं।

उद्योगः तालुका में कृषि पर आधारित उद्योग जैसे कि कपास ओटने की मिलें और दाल मिलें सक्रिय हैं।

प्राकृतिक और आदिवासी विरासतः 'नवापुर' आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ भील, कोंकणी और पावरा समुदाय की समृद्ध लोक संस्कृति, नृत्य और पारंपरिक उत्सव देखने को मिलते हैं।

वन संपदाः यह क्षेत्र अपनी मूल्यवान लकड़ी और महुआ के जंगलों के व्यापार के लिए भी जाना जाता है

शहादा

शहादा महाराष्ट्र का एक प्रमुख विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र है।

ग्राम पंचायतें: इस तालुका के ग्रामीण विकास की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों पर है, जिनमें से कई डिजिटल और आदर्श गांव के रूप में विकसित हो रही हैं।

मुख्य पुलिस स्टेशनः कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 'शहादा' शहर और ग्रामीण इलाकों में अलग-अलग पुलिस थाने काम करते हैं।

ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल प्रकाशाः ताप्ती और गोमाई नदी के संगम पर स्थित यह गांव एक पवित्र तीर्थ स्थल है, इसे 'दक्षिण काशी' या 'खानदेश की काशी' भी कहा जाता है, जो अपने प्राचीन केदारेश्वर और काशी विश्वनाथ मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

सारंगखेड़ाः ताप्ती नदी के तट पर स्थित यह स्थान एक ऐतिहासिक एकमुखी दत्त मंदिर के लिए जाना जाता है, यहाँ हर साल दिसंबर में लगने वाला 'चेतक घोड़ा मेला' पूरे भारत में प्रसिद्ध है, जहाँ देश भर से बेहतरीन नस्लों के घोड़े खरीदे और बेचे जाते हैं।

तोरणमालः हालांकि यह अक्रानी (धडगांव) तालुका में आता है, लेकिन 'शहादा' से यहाँ जाने के लिए मुख्य रास्ता और परिवहन सुविधाएं उपलब्ध हैं, यह महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध ठंडा हवा का स्थान है।

कृषि और उद्योग फलों की खेती (केला और पपीता): 'शहादा' तालुका अपनी उन्नत बागीचा खेती के लिए पूरे जिले में सबसे आगे माना जाता है, यहाँ बड़े पैमाने पर उच्च गुणवत्ता वाले केले और पपीते की फसल उगाई जाती है, जिनकी सप्लाई गुजरात और अन्य राज्यों में की जाती है।

नकद फसलें: यहाँ की उपजाऊ काली मिट्टी के कारण गन्ना और कपास का भारी उत्पादन होता है।

चीनी मिलः तालुका में सहकारिता के आधार पर चलने वाले चीनी कारखाने मौजूद हैं, जो स्थानीय किसानों की रीढ़ की हड्डी हैं।

शिक्षा शहादा को नंदुरबार जिले का एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र माना जाता है, यहाँ कई नामी कॉलेज और संस्थान हैं, अभियांत्रिकी और फार्मेसी कॉलेज कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय कृषि महाविद्यालय आदि।

नंदुरबार में सनातन मंदिर

प्रकाशा मंदिर (दक्षिण काशी)

महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में तापी, गोमाई और अरुणा नदियों के पवित्र त्रिवेणी संगम पर स्थित उत्तर-महाराष्ट्र का एक अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक हिंदू तीर्थ स्थल है। हिंदू धर्म में इसे उत्तर भारत की काशी (वाराणसी) के समान पूजनीय और फलदायी माने जाने के कारण ही 'दक्षिण काशी' नाम से संबोधित किया जाता है, जहाँ मुख्य रूप से एक ही विशाल सभामंडप से जुड़े दो ऐतिहासिक गर्भगृहों में केदारेश्वर महादेव और काशी विश्वेश्वर के प्राचीन पाषाण शिवलिंग विराजमान हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग (ASI) की खुदाई में यहाँ लगभग २,५०० से ४,५०० वर्ष पुराने ताम्रपाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस भूमि की गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रामाणिकता को सिद्ध करते हैं। तापी बैराज बांध के शांत पानी के किनारे बसा यह परिसर न केवल स्थानीय शिवभक्तों के लिए दैनिक आस्था

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध नंदुरबार के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

बालशहीद शिरिष कुमार स्मारक

Suresh Agrawal
Managing Director
Mob: 7020245102, 93712 22700

Mothers Love SPICES
DEVKA FOOD PRODUCT PVT. LTD.

Patonda, Nandurbar, Maharashtra, Bharat- 425412
devka_foods@yahoo.co.in

श्री गणपति मंदिर

'नंदुरबार' के घी बाजार (वीरल विहार) में स्थित श्री गणपति मंदिर शहर के सबसे प्राचीन, भव्य और प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। स्थानीय लोगों के बीच इस मंदिर की अत्यधिक मान्यता है और इसे एक 'इच्छा-पूर्ति' (मनोकामना पूर्ण करने वाले) सिद्धपीठ के रूप में पूजा जाता है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान गणेश की एक अत्यंत सुंदर और आकर्षक प्रतिमा स्थापित है, जिसे विशेष अवसरों पर पारंपरिक आभूषणों और वस्त्रों से अलंकृत किया जाता है, यहाँ रोज़ाना होने वाली आरती में भारी संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं और विशेष रूप से गणेश चतुर्थी तथा संकट चतुर्थी के त्योहारों पर यहाँ का माहौल बेहद जीवंत, भक्तिमय और उत्सवपूर्ण हो जाता है।

वाघेश्वरी माता मंदिर

वाघेश्वरी माता मंदिर (वाघेश्वरी नगर, नंदुरबार) यह मंदिर शहर के पश्चिमी छोर पर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और इसे 'नंदुरबार' का सबसे खूबसूरत धार्मिक स्थल माना जाता है। यह मंदिर आदिशक्ति माता वाघेश्वरी (दुर्गा माता का रूप) को समर्पित है।

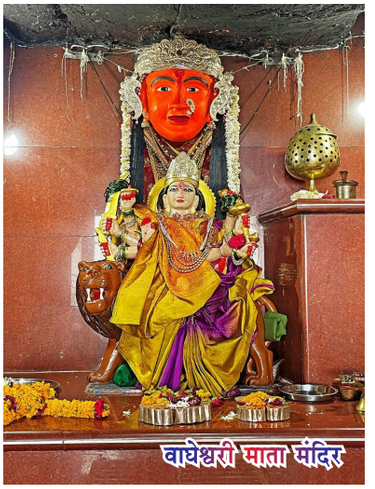

भौगोलिक विशेषता: पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण यहाँ का वातावरण बेहद शांत और ठंडा रहता है। मंदिर परिसर से पूरे 'नंदुरबार' शहर का एक अद्भुत विहंगम दृश्य दिखाई देता है, पर्यटकों के लिए यहाँ तक पहुँचने के लिए एक पक्की सड़क बनाई गई है।

नवरात्रि उत्सव: अश्विन और चैत्र नवरात्रि के दौरान इस पहाड़ी पर नौ दिनों का भव्य मेला लगता है। मंदिर को दीपों से सजाया जाता है और रात के समय पहाड़ी से दिखने वाली रोशनी बेहद अलौकिक लगती है।

श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर

महाराष्ट्र के 'नंदुरबार' जिले में 'शहादा' तालुका शेष पृष्ठ २१ पर...

पृष्ठ २० से... के प्रकाशा गाँव में स्थित श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र तीर्थस्थल है, जो तापी और गोमाई नदियों के पावन संगम तट पर बसा हुआ है, इस पूरे क्षेत्र को ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के

केदारेश्वर महादेव मंदिर

कारण 'दक्षिण काशी' के नाम से जाना जाता है। यहाँ भगवान शिव 'केदारेश्वर' रूप में प्रतिष्ठित हैं और मान्यता है कि यहाँ श्रद्धापूर्वक पूजा करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। महाशिवरात्रि और सावन के महीने में यहाँ भव्य मेलों का आयोजन होता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु पवित्र संगम में स्नान करने और महादेव के दर्शन करने आते हैं।

श्री दंडपाणेश्वर गणपति मंदिर

श्री दंडपाणेश्वर गणपति मंदिर (देवमोगरा, नंदुरबार) यह 'नंदुरबार' शहर का

दंडपाणेश्वर गणपति मंदिर

सबसे प्रसिद्ध, आधुनिक और विशाल मंदिर परिसरों में से एक है।

मुख्य देवता: यह मंदिर भगवान गणेश को समर्पित है, जहाँ बप्पा की एक बेहद आकर्षक और भव्य प्रतिमा स्थापित है।

विशेषता और परिसर: इस मंदिर परिसर को एक बेहतरीन पारिवारिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है, यहाँ बच्चों के मनोरंजन के लिए एक सुंदर बगीचा और एक टॉय ट्रेन की व्यवस्था है, जो शाम के समय बच्चों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र होती है।

सांस्कृतिक महत्व: गणेश चतुर्थी और संकष्टी चतुर्थी के दिन यहाँ विशेष महाआरती और छप्पन भोग का आयोजन किया जाता है, जिसमें पूरा 'नंदुरबार' शहर उमड़ पड़ता है।

श्री दत्त मंदिर

'नंदुरबार' शहर के कोरीट रोड (विमल विहार) पर स्थित श्री दत्त मंदिर भगवान दत्तात्रेय (ब्रह्मा, विष्णु और महेश के संयुक्त अवतार) को समर्पित एक अत्यंत शांत, सुंदर और प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, शहर के मुख्य व्यस्त इलाकों से थोड़ा हटकर होने के कारण इस मंदिर का वातावरण बेहद सौम्य, स्वच्छ और ध्यान लगाने

दत्त मंदिर

के लिए एकदम अनुकूल है। मंदिर की स्थापत्य कला और सुंदर नक्काशी भक्तों को आकर्षित करती है, जहाँ नियमित रूप से आरती, भजन और आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विशेष रूप से 'दत्त जयंती' और प्रत्येक गुरुवार को यहाँ स्थानीय श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है, जो भगवान दत्त के दर्शन कर मानसिक शांति और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

श्री मोठा मारुति राम मंदिर

'नंदुरबार' के धुले रोड (वीरल विहार) पर स्थित श्री मोठा मारुति राम मंदिर

मोठा मारुति राम मंदिर

शहर का एक अत्यंत प्रसिद्ध और पवित्र धार्मिक स्थल है, जो भगवान हनुमान (मारुति) और भगवान श्री राम को समर्पित है, इस मंदिर की वास्तुकला पारंपरिक और बेहद आकर्षक है, यहाँ स्थापित भगवान मारुति की विशाल प्रतिमा श्रद्धालुओं के बीच गहरी श्रद्धा का केंद्र है। मंदिर का परिसर बहुत शांत, स्वच्छ और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर है, जो भक्तों को ध्यान और प्रार्थना के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करता है, यहाँ मुख्य रूप से हनुमान जयंती और राम नवमी के त्योहारों पर भव्य उत्सव मनाए जाते हैं, जिसमें हज़ारों की संख्या में स्थानीय और आसपास के लोग दर्शन और महाप्रसाद के लिए **शेष पृष्ठ २३ पर...**

प्रसिद्ध नंदुरबार के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Pravin Manakchand Lathi
Proprietor
Mob: 9823544355

QUALITY PRODUCTS BETTER YIELDS

NEW SAGAR AGRO AGENCY
Retailer of Seeds, Pesticides & Fertilizers

SEEDS PESTICIDES FERTILIZERS

Main Road, Khandbara, Navapur, Nandurbar, Maharashtra, Bharat- 425416

नंदुरबार में जैन मंदिर

जैन तीर्थंकर लेणी गुफा मंदिर

जैन तीर्थंकर लेणी गुफा मंदिर महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के शहादा (मोहिंदे टी. हवेली) में गोमती नदी के तट पर स्थित लगभग २००० वर्ष प्राचीन और अलौकिक दिगम्बर जैन तीर्थ है, जिसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका नदी के भीतर चट्टान को काटकर बनाया जाना है, जिसके कारण मानसून में ये गुफाएं पूरी तरह नदी के बहते जल में समाहित हो जाती हैं, इस ऐतिहासिक गुफा मंदिर के मूलनायक भगवान नमिनाथ और नेमिनाथ जी हैं, जहाँ कुल ५६ प्राचीन जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां ध्यानमग्न मुद्रा में स्थापित हैं। धार्मिक महत्व के साथ-साथ यह परिसर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, एक सुव्यवस्थित गौशाला और औषधीय वनस्पति उद्यान के लिए भी जाना जाता है।

नागार्जुन गुफाएं

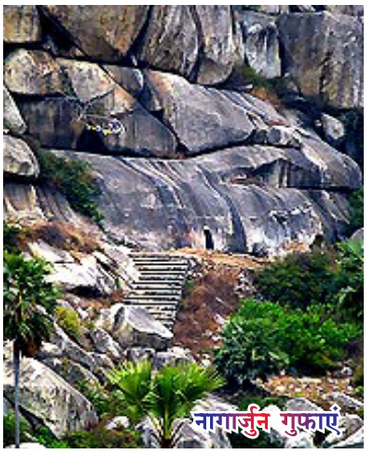

नागार्जुन गुफाएं महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में तोरणमाल घाट मार्ग पर खड़की गांव के पास स्थित एक प्राचीन और पवित्र दिगम्बर जैन गुफा स्थल है। तोरणमाल की शांत और हरी-भरी पहाड़ियों के बीच चट्टानों को काटकर बनाई गई ऐतिहासिक गुफा में २३वें जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की अत्यंत सुंदर और ध्यानमग्न प्रतिमा दीवारों पर उकेरी गई है। प्राचीन काल में जैन मुनियों और संतों की एकांत साधना के लिए उपयोग की जाने वाली यह गुफा आज अपने अद्भुत आध्यात्मिक वातावरण, प्राचीन शिल्पकला और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जानी जाती है।

श्री १००८ अजीतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर

धार्मिक महत्ता: वायरल विहार क्षेत्र में स्थित यह मंदिर शुद्ध दिगम्बर जैन परंपराओं के अनुसार संचालित होता है, यहाँ आत्म-साधना के लिए एक बेहद शांत वातावरण मिलता है।

प्रतिमा की बनावट: इस मंदिर की वेदी पर पाषाण (चट्टान) से निर्मित गहरे रंग की प्राचीन दिगम्बर मुद्रा में तीर्थंकर देव की ध्यानमग्न प्रतिमाएं स्थापित हैं। मूर्तियाँ पूरी तरह से दिगंबर (वस्त्रहीन) और वीतरागी स्वरूप को दर्शाती हैं, जो

तपस्या का प्रतीक हैं

गतिविधियां: यहाँ नियमित रूप से अभिषेक, शांतिधारा और जैन मुनियों के आगमन पर आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन किया जाता है।

श्री महावीर स्वामी जैन देरासर

मूलनायक: यह मंदिर जैन धर्म के २४वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को समर्पित है, श्री महावीर स्वामी देरासर में स्थापित प्रतिमा का श्रृंगार (आंगी) भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देता है

यात्रियों के लिए सुविधाएं: इस मंदिर परिसर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ बाहर से आने वाले जैन तीर्थयात्रियों और साधु-संतों के रुकने के लिए जैन धर्मशाला की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध है।

उत्सव: कार्तिक पूर्णिमा, चैत्र पूर्णिमा और महावीर जन्म कल्याणक के समय यहाँ विशाल धार्मिक मेलों जैसा माहौल रहता है

श्री विमलनाथ स्वामी गृह जिनालय

यह मंदिर जैन धर्म की एक बहुत ही सुंदर और महत्वपूर्ण परंपरा को दर्शाता है, घरेलू या आवासीय कॉलोनियों के भीतर बना 'गृह जिनालय'।

मुख्य जानकारी: यह मंदिर जैन धर्म के १३वें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ को समर्पित है।

अवधारणा: 'गृह जिनालय' एक छोटा लेकिन पूर्णतः शुद्ध मंदिर परिसर होता है जो रिहायशी इलाकों के करीब बनाया जाता है, इसका उद्देश्य यह होता है कि आसपास रहने वाले परिवार रोजाना सुबह भगवान का अभिषेक-पूजन कर सकें और शाम को सामूहिक रूप से आरती में शामिल हो सकें।

स्थान: यह नंदुरबार के वैभव नगर क्षेत्र में कन्यादान मंगल कार्यालय के ठीक पीछे स्थित है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

नंदूरबार के महत्वपूर्ण स्थल

तोरणमाल हिल्स स्टेशन

महाराष्ट्र की खूबसूरत सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में बसा 'तोरणमाल' एक अनमोल रत्न है, जो प्रकृति, इतिहास और शांति का अनोखा संगम पेश करता है। लगभग १,१५० मीटर की दूरी पर स्थित यह हिल स्टेशन शहरी जीवन की दौड़ से दूर एक शांत और शाश्वत भरा प्रवेश द्वार है, अपने मनमोहक समुद्र तटों, शांत झीलों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों के साथ, 'तोरणमाल' प्रकृति प्रेमियों और रोमांच के शौकीनों दोनों के लिए एक देखने योग्य स्थान है।

'तोरणमाल' नाम तोरण वृक्ष से लिया गया है, जो इस क्षेत्र में गिरवी पाया जाता है, यहां की जनाब जनजातियां तोरण देवी को, जो इस वृक्ष से जुड़ी देवी हैं, उर्वरता का पवित्र प्रतीक हैं।

शिरीष कुमार शहीद स्मारक

महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में स्थित एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक स्थल है, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक वीर बाल क्रांतिकारी शिरीष कुमार मेहता और उनके युवा साथियों के सर्वोच्च बलिदान की याद दिलाता है. यह स्मारक उस ऐतिहासिक घटना का गवाह है जहां महज १५ वर्ष की आयु में शिरीष कुमार ने मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे, इस स्मारक और इसके गौरवशाली इतिहास की पूरी जानकारी प्रस्तुत है:

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और घटनाभारत छोड़ो आंदोलन (१९४२): राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जब सन १९४२ में अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन का बिगुल फूंका, तो इसकी लहर 'नंदुरबार' तक भी पहुंची। **बच्चों का जुलूस:** ९ सितंबर १९४२ को नंदुरबार में स्कूली बच्चों ने हाथ में तिरंगा लेकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक शांतिपूर्ण विरोध जुलूस निकाला, जिसका नेतृत्व शिरीष कुमार कर रहे थे.अंग्रेजों की क्रूरता: जब यह जुलूस नंदुरबार के 'मंगळ बाजार' (मंगलबार बाजार) इलाके में पहुंचा, तो ब्रिटिश पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया और बच्चों को रोकने के लिए बंदूकें तान दीं।

अंतिम शब्द: जब पुलिस अधिकारी ने गोली मारने की धमकी दी, तो निडर शिरीष कुमार ने हाथ में तिरंगा थामे हुए सीना आगे कर दिया और कहा **'हिम्मत है तो मुझे गोली मार दो' सर्वोच्च बलिदान:** पुलिस ने क्रूरतापूर्वक गोलियां चला दीं, जिससे शिरीष कुमार मेहता (उम्र १५ वर्ष) और उनके साथ चार अन्य वीर बच्चे (लालदास शाह, धनसुखलाल वानी, सशिवदन शाह और रामचंद्र शाह) मौके पर ही शहीद हो गए।

स्मारक का महत्व और आकर्षण शहीदों को श्रद्धांजलि: नंदुरबार के इसी ऐतिहासिक स्थान पर इन वीर बाल क्रांतिकारियों की स्मृति में एक सुंदर और गरिमामयी शहीद स्मारक बनाया गया है।

मुख्य प्रतिमा: स्मारक परिसर में शिरीष कुमार की हाथ में तिरंगा लिए हुए एक भव्य प्रतिमा स्थापित है, जो उनके अदम्य साहस को दर्शाती है।

प्रेरणा का केंद्र: यह स्थान नंदुरबार आने वाले पर्यटकों और देशभक्तों के लिए मुख्य आकर्षण है, हर साल विशेष रूप से स्वतंत्रता दिवस (१५ अगस्त), गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी) और उनके शहादत दिवस (९ सितंबर) पर यहां भव्य श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की जाती हैं।

पृष्ठ २१ से... एकत्रित होते हैं।

खोडाई माता मंदिर

खोडाई माता मंदिर महाराष्ट्र राज्य के नंदुरबार जिले के नेहरू नगर, मार्केट रोड स्थित ९७ण३६८इइ पते पर एक प्रसिद्ध हिंदू मंदिर है। यह मंदिर आध्यात्मिक पूजा, पारंपरिक मंदिर संस्कृति और क्षेत्रीय विरासत में रुचि रखने वाले भक्तों, तीर्थयात्रियों और आगंतुकों को आकर्षित करता है। नंदुरबार और आसपास के गांवों से आगंतुक अक्सर दर्शन और धार्मिक गतिविधियों के लिए मंदिर आते हैं।

महाराष्ट्र की आध्यात्मिक विरासत से जुड़े आस-पास के गांवों और कस्बों से श्रद्धालु अक्सर इस मंदिर में दर्शन करने आते हैं। खोडाई माता मंदिर से संबंधित मंदिर के रास्ते, आस-पास के आध्यात्मिक स्थल, आगंतुकों के लिए अपडेट, फोटो, वीडियो और यात्रा संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त करें।

शारदीय नवरात्रि उत्सव इस मंदिर का मुख्य सालाना उत्सव है, इस दौरान यहां दस दिन की तीर्थयात्रा होती है।

शिवधाम

शिवधाम (श्री शिव धाम उद्यान) महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में स्थित एक बेहद प्रसिद्ध, शांतिपूर्ण और खूबसूरत पर्यटन व धार्मिक स्थल है, यह स्थान विशेष रूप से अपनी भव्य और विशाल भगवान शिव की प्रतिमा के लिए जाना जाता है।

शिव धाम उद्यान (पार्क): यह केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि इसे एक सुंदर उद्यान (पार्क) के रूप में विकसित किया गया है, यहाँ हरे-भरे लॉन और बैठने की अच्छी व्यवस्था है।

संकष्टा देवी

महाराष्ट्र के 'नंदुरबार' में स्थित श्री संकष्टा देवी मंदिर (जिन्हें संकटा माता भी कहा जाता है) यहाँ का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिर है, यह मंदिर नंदुरबार शहर की ग्रामदेवी और प्राचीन काल के नंद राजाओं की कुलदेवी को समर्पित है।

नंदुरबार अग्रवाल समाज

'अग्रवाल' शब्द की उत्पत्ति 'अग्रोहा' और 'महाराजा अग्रसेन' से हुई है, इसका सीधा अर्थ है 'अग्रोहा देश के निवासी' या 'महाराजा अग्रसेन के वंशज'। यह भारत का एक प्रमुख और प्रतिष्ठित व्यापारिक समुदाय (वैश्य समाज) है, जो अपनी ईमानदारी, व्यावसायिक कुशलता और दान-पुण्य के लिए जाना जाता है।

नंदुरबार अग्रवाल समाज: नंदुरबार अग्रवाल समाज महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में रहने वाले अग्र परिवारों का एक आधिकारिक और संगठित संगठन है, जब सदियों पहले यह समाज उत्तर भारत से आकर नंदुरबार में बसा, तो उन्होंने स्थानीय स्तर पर अपनी संस्कृति को बचाए रखने, व्यापार में एक-दूसरे की मदद करने और समाज सेवा के उद्देश्य से इस संघ की स्थापना की आज यह संगठन नंदुरबार शहर की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति का एक मुख्य आधार स्तंभ है।

➜ **पूर्वजमहाराजा अग्रसेन के वंशज:** यह समाज महाराजा अग्रसेन को अपना पूर्वज मानता है, जो प्राचीन 'अग्रोहा' (हरियाणा) के राजा थे।

१८ गोत्र प्रणाली: यह समाज महाराजा अग्रसेन के बेटों द्वारा स्थापित १८ गोत्रों पर चलता है। नंदुरबार में मुख्य रूप से गर्ग, गोयल, बंसल, मित्तल, सिंघल और जिंदल उपनाम वाले परिवार रहते हैं।

खानदेश में आगमन: व्यापार के लिए सदियों पहले अग्रवंशी उत्तर भारत से महाराष्ट्र के खानदेश (नंदुरबार) क्षेत्र में आकर बस गए थे।

➜ **सामाजिक-आर्थिक स्थितिव्यापार में अग्रणी:** पारंपरिक रूप से व्यापारी वर्ग से होने के कारण नंदुरबार के अनाज, दाल, मसालों के थोक व्यापार, कपड़ा बाजार और रिटेल सेक्टर में इस समाज का बड़ा दबदबा है।

'एक ईंट, एक रुपैया' की परंपरा: इसके तहत समाज का हर सक्षम परिवार किसी भी नए या जरूरतमंद अग्रवाल भाई को व्यापार शुरू करने के लिए 'एक ईंट और एक रुपैया' दान करता है।

➜ सामाजिक ढांचा और संस्थाएं अग्रवाल भवन: यह समाज का मुख्य केंद्र है जो नवापुर रोड/नालवा रोड, वायरल विहार, नंदुरबार पर स्थित है, यहां एक बड़ा सामुदायिक हॉल है।

उपयोगिता: इस भवन का उपयोग सामाजिक बैठकों, युवक-युवती परिचय सम्मेलनों और शादियों के लिए किया जाता है।

महिला और युवा विंग: यहाँ 'अग्रवाल महिला मंडल' और 'अग्रवाल युवा संगठन' भी सक्रिय हैं जो सामाजिक और धार्मिक कार्यों का संचालन करते हैं।

➜ **मुख्य सांस्कृतिक उत्सव अग्रसेन जयंती:** यह इस समाज का सबसे बड़ा वार्षिक उत्सव है, इस दिन पूरे 'नंदुरबार' शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है और महाप्रसाद का आयोजन होता है।

➜ **सामूहिक त्योहार:** समाज के सभी लोग एक साथ मिलकर दिवाली मिलन और होली जैसे त्योहार मनाते हैं।

➜ **जन-कल्याण और दान-पुण्यचिकित्सा शिविर:** समाज समय-समय पर आम जनता के लिए मुफ्त स्वास्थ्य जांच और रक्तदान शिविर लगाता है।

शिक्षा के लिए सहायता: गरीब और होनहार छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप (छात्रवृत्ति) दी जाती है।

सामाजिक सुधार: यह समाज सामूहिक विवाहों को बढ़ावा देता है ताकि शादियों में होने वाली फिजूलखर्ची को रोका जा सके।

➜ **जन-कल्याण और दान-पुण्यचिकित्सा शिविर:** समाज समय-समय पर आम जनता के लिए मुफ्त स्वास्थ्य जांच और रक्तदान शिविर लगाता है।

शिक्षा के लिए सहायता: गरीब और होनहार छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप (छात्रवृत्ति) दी जाती है।

सामाजिक सुधार: यह समाज सामूहिक विवाहों को बढ़ावा देता है ताकि शादियों में होने वाली फिजूलखर्ची को रोका जा सके।

संस्कृति को बचाना: उत्तर भारत से महाराष्ट्र आने के बाद अपनी भाषा, खान-पान और रीति-रिवाजों को जिंदा रखने के लिए अग्रवाल समाज कार्यरत है।

आपसी सुरक्षा: किसी भी परिवार पर आर्थिक या सामाजिक संकट आने पर पूरा समाज एक साथ मिलकर उसकी मदद करता है।

सामूहिक प्रगति: एकजुट होकर स्थानीय प्रशासन के सामने अपनी बात रखना और शहर के विकास में योगदान देता है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पंचगव्य

मानव समाज का एक सुरक्षा कवच

आयुर्वेद सृष्टि की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है जो शरीर, मन और आत्मा, इन तीनों की साम्यता को स्वास्थ्य की परिभाषा मानती है। आयुर्वेद में वर्णित अनगिनत औषधियों में पंचगव्य का विशेष और सम्मानित स्थान है। पंचगव्य पाँच गौ-उत्पादों का समुच्चय है गो दुध (दूध), गो-दधि (दही), गो-घृत (घी), गो-मूत्र, गो-मय (गोबर)। आयुर्वेद के अनुसार ये पाँच पदार्थ न केवल सात्विक, पौष्टिक और रसायनीय हैं बल्कि शरीर और मन दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। पंचगव्य को शरीर की शुद्धि, धातु-पोषण, ओज-वृद्धि, मेधा वर्धन तथा मानसिक शांति का प्रमुख साधन माना गया है। पंचगव्य विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर, उन्माद, अपस्मार, कामला आदि रोगों में अत्यंत उपयोगी है।

गोदुग्ध

गो दुग्ध मानव समाज के लिए अमृत तुल्य है, गोदुग्ध को संपूर्ण आहार, गया है, यह रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र सभी धातुओं को दृढ़ करता है। चरक के अनुसार प्रवरं जीवनीयानां क्षीरं उक्त रसायनं। दुग्ध जीवनीय द्रव्यों के अंदर श्रेष्ठ है, शरीर एवं मन की रोग प्रतिरोधक शक्ति

ओजवर्धक, और सत्त्ववर्द्धक पदार्थ माना गया है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में गोदुग्ध को जीवन-पोषण का उत्तम स्रोत बताया गया है। आयुर्वेद के अनुसार दूध केवल पोषण ही नहीं देता, बल्कि शरीर (शरीर-धातु) तथा मन (मनोदोष सत्त्व) दोनों पर गहन प्रभाव डालता है। भवप्रकाश निघण्टु व चरक संहिता में गोदुग्ध के गुण इस प्रकार बताए गए हैं-

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्शुक्ष्ण पिच्छिलं गुरु मन्द प्रसन्न च गव्य दशगुणं पयः ।।

मधुर रस (स्वाद), शीत वीर्य, मधुर विपाक, स्निग्ध, बल्य, ओजस वर्ध का इन गुणों के कारण गोदुग्ध शरीर में वात-पित्त को शांत करता है तथा कफ का सौम्यवर्धन करता है। गोदुग्ध को समस्त धातुओं का पोषक कहा को बढ़ाता है। गो दुग्ध को संपूर्ण आहार का आख्या दिया गया है। ओज वर्धक भी है। यद्यपि गोदुग्ध स्निग्ध और गुरु है, परंतु अग्नि मंद न हो तो यह अग्नि को स्थिर रखता है और धातुओं के पोषण में सहायक है। हल्दी, अदरक या दालचीनी मिलाकर प्रयोग करने से पाचन और भी सुगम होता है। दूध ओज को बढ़ाता है। ओज ही शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति माना गया है। गोदुग्ध का नियमित उपयोग थकान, क्षीणता, दीर्घकालीन कमजोरी, जीर्ण रोग में लाभदायी है। कैल्शियम, वत्सा और प्रोटीन की उपस्थिति के कारण गोदुग्ध अस्थि मज्जा को पोषित करता है। त्वचा में निखार, कोमलता तथा स्नेह-भाव दूध की स्निग्धता से प्राप्त होते हैं। आयुर्वेद में मन तीन गुणों से प्रभावित होता है- सत्व, रज, तम। दूध को **शेष पृष्ठ २६ पर...**

पृष्ठ २५ से... सत्ववर्धक आहार कहा गया है। गोदुग्ध रस, ओज एवं मन को जोड़ने वाला आहार है। भवप्रकाश के अनुसार दूध हृदय, मन, और इंद्रियों को शान्त करता है, यह चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, तनाव, मानसिक थकान को कम करता है। दूध मस्तिष्क को पोषण देने वाला आहार है। अष्टांग हृदय में उल्लेख है कि दूध मनोबल, धारणाशक्ति और स्मरणशक्ति को बढ़ाता है। रात्रि में कुनकुना दूध पीना वात तथा पित्त को शांत कर प्राकृतिक नींद को बढ़ाता है, इसे एक प्राकृतिक एंटी-स्ट्रेस
टॉनिक माना गया है।

गोदुग्ध आयुर्वेद में एक ऐसा द्रव्य है जो शरीर और मन दोनों के लिए पोषणदायक, शान्तिदायक और जीवन- वर्धक माना गया है, यह धातुओं को बल देता है, ओज बढ़ाता है. मन को सत्वगुण से परिपूर्ण करता है तथा मानसिक तनाव, अनिद्रा और थकान को कम करता है। समुचित मात्रा और उपयुक्त समय विशेषकर रात्रि में प्रयोग करने से गोदुग्ध सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है।

दधि (दही)

दधि (दही) को शक्तिवर्धक, स्थैर्यदायक तथा शरीर-धातुओं को पोषित करने वाला गुणकारी आहार माना गया है। दधि में विशेष रूप से 'स्निग्ध-गुरु' गुण पाए जाते हैं, जो इसे बलदायक और स्थिरता बढ़ाने वाला बनाते हैं। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता तथा भवप्रकाश निघण्टु में दही के गुण, दोष और उपयुक्त प्रयोग का विस्तार से वर्णन मिलता है। आयुर्वेद के अनुसार दधि के प्रमुख गुण इस प्रकार हैं:

रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहन बल वर्धनं पाके अम्लं उष्णं वातघ्नं मंगल्यं वृंहण दधि।

अम्ल रस प्रधान, गुरु (भारी), उष्ण वीर्य, स्निग्ध, स्थैर्यकर, बल्य (बलवर्धक)।

चरक संहिता में कहा गया है कि दधि शरीर को शीघ्र शक्ति प्रदान करने वाला, वृष्य तथा पाचन के बाद बल को बढ़ाने वाला होता है। दही को शरीर में मांस व मेदधातु का पोषक बताया गया है। यह क्षीणता, थकान और दुर्बलता में बलवर्धक आहार के रूप में प्रयोग होता है। दही अग्नि को मंद नहीं करता, बल्कि सही मात्रा में लिया जाए तो यह पाचन को स्थिर करता है। दही उष्ण वीर्य और धातु-पोषक होने के कारण शरीर की व्याधि क्षमता बढ़ाता है। यह आंतों के सूक्ष्मजीवों को संतुलित करता है तथा आंत्र-स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है जो प्रतिरक्षा का आधार माना गया है। दही पीनस, अतिसार, विषम ज्वर, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, कार्श्व में अत्यन्त उपयोगी है। दही का रिनग्ध तथा स्थिरकारी प्रभाव नर्वस सिस्टम को स्थिर करता है। आयुर्वेद में इसे हृदयं (हृदय के लिए हितकर) बताया गया है, जिसका सीधा संबंध मन से है। दही में उपस्थित जैव-उपयोगी पोषक अवयव मस्तिष्क को पोषण प्रदान करते हैं, यह बुद्धि, ध्यान और कार्यक्षमता में सौम्य वृद्धि करता है, परंतु आयुर्वेद के अनुसार इसका सेवन सही समय सही मात्रा और उचित संगति में ही लाभकारी है।

घृत (घी)

घृत (गाय का घी) को सर्वश्रेष्ठ 'स्नेह-द्रव्य' और 'महाविषघ्न', बल्य, मेध्य तथा रसायन' माना गया है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में घृत को ओज-वर्धक, मस्तिष्क पोषक और आयुष्य वर्धक बताया गया है। घृत शरीर की धातुओं को पोषित करने के साथ-साथ मन को शांत स्थिर और सत्त्वगुण से समृद्ध करता है। आयुर्वेद के अनुसार घृत के प्रमुख गुण मधुर रस, शीत वीर्य, मधुर विपाक, स्निग्ध, गुरु, पित्त-शामक, ओज-वर्धक और मेध्य (मस्तिष्क के लिए हितकारी)। गो घृत स्मृति वर्धक, बुद्धि वर्धक, अग्नि दीपक यानी पाचन संस्थान को मजबूत करने वाला, ज्ञानेंद्रियों को दृढ़ करने वाला यानी दृष्टि शक्ति आदि को बढ़ाने वाला, बालों को घना और काला रखने वाला, बालों के वृद्धि करने वाला, शरीर को अकाल वार्धक्य से बचाने वाला है। पौरुष शक्ति को बढ़ाने वाला, शरीर के अंदर बढ़े हुए पित्त को शान्त करने वाला, त्वचा की कांति बढ़ाने वाला होता है। विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर, उन्माद, अपस्मार, कामला आदि रोगों में अत्यंत उपयोगी है। घृत शरीर की कोशिकाओं को स्निग्धता प्रदान करता है. जिससे त्वचा में नमी चमक और कोमलता बनी रहती है। आयुर्वेद में घृत को विशेष मेध्य औषधि माना गया है। घृत मन को स्थिर, शांत और सौम्य बनाता है। सत्वगुण- वर्धक होने से यह मानसिक स्पष्टता, सकारात्मकता और प्रसन्नता को बढ़ाता है। घृत आयुर्वेद में एक उत्कृष्ट रसायन, ओजवर्धक और मेध्य द्रव्य है, यह शरीर की धातुओं को पोषित करता है, प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और मस्तिष्क को स्थिर व समर्थ बनाता है। मन पर इसका प्रभाव मानसिक शांति, बुद्धि-वृद्धि और सकारात्मकता को बढ़ाने वाला है। उचित मात्रा, समय और संयोजन में उपयोग करने से 'घृत' शरीर और मन दोनों को संपूर्ण रूप से सुदृढ़ बनाता है।

गोमूत्र

गोमूत्र को उत्तम शोधन, त्रिदोष नाशक तथा रोगनाशक द्रव्य माना गया है, इसे तीक्ष्ण, कषाय, कटु, दीपन पाचन, लेखन और मेदोहर बताया गया है, इसके गुण शरीर के दोषों को संतुलित करते हैं और विशेष रूप से कफ-वात को शांत करते हैं।

गव्यं समबुरे किंचित् दोषघ्नं कृमि कुष्ठनुत् ।
कण्डूं च शमयेत पीतं सम्यग दोषोदरे हितं ॥ च. सू.१/१०२

गोमूत्र शरीर की आंतरिक शुद्धि में अत्यंत प्रभावी है, यह दीपन पावन द्रव्य है. जिससे अग्नि को बल मिलता है और पाचन सुधार होता है, यह मेद (फैट) को कम करता है, रक्त एवं यकृत (लिवर) की शुद्धि बढ़ाता है, त्वचा रोग, सूजन और जीर्ण विकारों में उपयोगी है। गोमूत्र मूत्रकृच्छ्र, कृमि, त्वचा रोग, मेदो वृद्धि, और अजीर्ण में विशेष लाभकारी है। शरीर की शुद्धि से आलस्य, मानसिक मारीपन, तनावजन्य थकान में कमी आती है।

गोमय (गोबर)

'गोमय' को पवित्र, शुद्धिकारक, विषनाशक और शारीरिक दोष शांतकारी माना गया है। 'गोमय' केवल कृषि या ईंधन का साधन नहीं, बल्कि औषधीय और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद और विभिन्न निघण्टुओं में गोमय को रोगनाशक, कृमिनाशक और पर्यावरण - शुद्धिकारक द्रव्य के रूप में वर्णित किया गया है। गोमय में दाह-शामक, विषनाशक और रोगाणुनाशक गुण पाए जाते हैं, यह त्वचा रोग, सूजन, संक्रमण में उपयोगी माना गया है। गोमय द्वारा किए गए धूपन से वातावरण शुद्ध होता है और रोगजनक जीवाणुओं का नाश होता है. जिससे श्वसन स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। गोमय धूपन तनाव, मानसिक भारीपन, नकारात्मकता को कम करता है। आयुर्वेद के अनुसार शुद्ध. शांत और सौम्य वातावरण सत्वगुण को बढ़ाता है, जिससे मन में प्रसन्नता, एकाग्रता और स्थिरता आती है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि मैं भारत हूँ

राकेश अग्रवाल

व्यवसायी व समाजसेवी
अलवर निवासी-नवापुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९०२८१८१३९१

राकेश जी अपनी जन्मभूमि को कर्मभूमि 'नंदुरबार' जिले के 'नवापुर' तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि भौगोलिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, जिसका रेलवे स्टेशन आधा गुजरात तो आधा महाराष्ट्र में लगता है और यह नंदुरबार शहर से मात्र ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, यहां अग्रवाल समाज के ८५ परिवार हैं, अग्रसेन भवन भी बना हुआ है। समय के साथ 'नवापूर' विकासित हुआ है, विशेषकर कृषि क्षेत्र यहां का बहुत ही उत्तम है, हर तरह की फसलों की उपज है, मुख्य रूप से धान व सोयाबीन की फसलें अधिक होती है। खान-पान की चीजों में यहां का अरबी का पातरा सबसे प्रसिद्ध है। यहां कई धार्मिक स्थान है। 'नंदुरबार' जिले की बात की जाए तो यहां तोरणमाल हिल स्टेशन सबसे प्रसिद्ध है, इसके अलावा खोड़ाई माताजी का मंदिर विशेष उल्लेखनीय है, जहां वार्षिक उत्सव का भी आयोजन होता है। 'नवापुर' में राजस्थानी समाज द्वारा गौशालाएं भी संचालित है और भी कई विशेषताएं हैं 'नवापुर व नंदुरबार' में......

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

राकेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'अलवर' के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से नंदुरबार के 'नवापुर' तहसील में बसा हुआ है। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप राइस मिल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। नंदुरबार जिला अग्रवाल सम्मेलन के कार्यकारिणी में सदस्य हैं। आरएसएस और भाजपा से भी जुड़े हैं, अन्य कई संस्था से भी जुड़े है। जय गौमाता! जय भारत! **-मैं भारत हूँ**

सुरेश शंकरलाल अग्रवाल

शहर अध्यक्ष नंदुरबार अग्रवाल सभा
कालाडेरा निवासी-नंदुरबार प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७०२०२४५१०२

सुरेश जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'नंदुरबार' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'नंदुरबार' एक बहुत ही शांत और सामाजिक सद्भाव वाला क्षेत्र है, सामाजिक एकता और सामंजस्य हमेशा बना रहता है, यहां अग्रवाल समाज के ९० परिवार हैं सभी में आपसी घनिष्ठता रहती है।

पहले 'नंदुरबार' एक कस्बा था, २० साल पहले इसे जिला घोषित किया गया, तब से यहां के चारों दिशाओं में विकास हुआ है, यह आदिवासी बाहुल्य इलाका है। यहां इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कम है पर एग्रीकल्चर डेवलपमेंट बहुत अधिक है, यह कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहां मिर्ची, हल्दी, सोयाबीन, कपास जैसी फसलों की पैदावार अधिक है और उनसे जुड़े कारोबार है, यहां की अनाज मंडी सबसे बड़ी है, 'नंदुरबार' जिले में कई शुगर फैक्ट्रियां भी है। पर्यटन के दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां हिल स्टेशन तोरणमाल है, जहां का यदि विकास किया जाए तो पर्यटकों की अच्छी खासी भीड़ रहेगी। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां का 'प्रकाशा' नामक स्थान जहां पर तापी नदी बहती है, जो प्रतीकाशी के रूप में विख्यात है, यहां हर १२ वर्ष में कुंभ की तरह मेला लगता है। इसके अलावा यहां पर दंडापणेश्वर गणपति जी का ऐतिहासिक मंदिर है कहते हैं, जब छत्रपति शिवाजी महाराज सूरत को जीतकर लौट रहे थे, तो उन्होंने यहां पर अपनी छावनी लगाई थी, इसके अलावा बागेश्वरी माता जी का मंदिर व खोड़ाई माताजी का मंदिर भी उल्लेखनीय है, कहते हैं कि यहां के राजा 'नंदगवली' के नाम से इस क्षेत्र का नाम 'नंदुरबार' पड़ा। 'नंदुरबार' में कई गौशालाएं भी हैं, जिसमें राजस्थानी समाज भी पूरी तरह से सक्रिय रहता है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'नंदुरबार' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है, जिसके कई नाम है, सिर्फ हमारा 'भारत' है, जो कई नामों से जाना जाता है, जबकि नाम ही किसी भी व्यक्ति विशेष की पहचान होती है, 'भारत' नाम हमारी पहचान और संस्कृति है, इसीलिए भारत को सिर्फ 'भारत' ही बोला जाना चाहिए।

सुरेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'कालाडेरा' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'नंदुरबार' में संपन्न हुई है, यहां आप मैन्युफैक्चरिंग यूनिट से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, वर्तमान में नंदुरबार शहर अग्रवाल सभा के अध्यक्ष हैं, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन व महाराष्ट्र अग्रवाल सम्मेलन के कार्यकारिणी के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत! **-मैं भारत हूँ**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

प्रवीण लाठी

व्यवसायी व समाजसेवी
भीलवाड़ा निवासी-नंदुरबार प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२३५४४३५५

प्रवीण जी अपनी कर्मभूमि 'नंदुरबार' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले २० सालों में 'नंदुरबार' बहुत ही परिवर्तित हुआ है, जब से यह जिला बना है, तब से यहां के विकास को बहुत गति मिली है, हर क्षेत्र में विकसित हुआ है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, व्यापार बढ़ गया है, लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई है, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल की सुविधा बढ़ गई है। इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट बहुत ही अच्छा है, यहां का उद्योग व्यापार भी बहुत ही उत्तम है, जो मुख्यतः कृषि पर ही आधारित है, यहां हर तरह की फसल होती है पर मिर्च की पैदावार और सबसे अधिक है इसलिए नंदुरबार की मिर्ची पूरे भारत में प्रसिद्ध है जो अपनी गुणवत्ता के लिए विख्यात है। पर्यटन की बात की जाए तो 'नंदुरबार' में तोरणमाल हिल स्टेशन सबसे रमणीय स्थान है पर सरकार द्वारा कोई व्यवस्था न होने के कारण आज भी यह पर्यटकों से दूर है। धार्मिक स्थान में यहां कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है। यहां राजस्थान के प्रत्येक समाज निवास करते हैं, माहेश्वरी समाज के लगभग १२५ परिवार निवास करते हैं, अन्य समाज के भी अपने-अपने सामाजिक संस्थाएं और मंदिर व भवन बने हैं। 'नंदुरबार' में तीन-चार गौशालाएं हैं, जिसमें राजस्थानी समाज का सहयोग रहता है, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'नंदुरबार' में.....

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य प्राप्त होना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रवीण जी मूलतः राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित 'नारी गांव' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा महाराष्ट्र के 'जलगांव' में संपन्न हुई है। पिछले २० सालों से आप 'नंदुरबार' में बसे हैं और सीड्स और पेस्टिसाइज के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। आपके पुत्र सागर जी पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट है, सामाजिक कार्यों में विशेष रूचि रखते हुए कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं।

जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

मानवता की सबसे बड़ी सेवा देहदान

देहदान को लेकर कई भ्रांतियाँ हैं, लेकिन हकीकत देखी जाए तो यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा है, एक पार्थिक देह से कितने चिकित्सक प्रशिक्षित होते हैं, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है, ये चिकित्सक ही मानवता की सेवा करते हुए हमें रोगमुक्त रखने में अपना योगदान देते हैं। वास्तव में देखा जाए तो इससे बड़ा कोई पुण्य नहीं है।

- रामेश्वर सोनी, वृन्दावन

पाप कमाने की कोई भी इच्छा नहीं करता, हर कोई पुण्य ही कमाना चाहता है, ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई'' हिंदू धर्म शास्त्र के विशेष सूत्रों में यह सूत्र मुख्य माना जाता है और माना जाना भी चाहिए, मतलब यह हुआ कि पुण्य कमाने के वास्ते कुछ परहित का कार्य करना पड़ेगा, जैसे विद्यालय, दवाखाना, धर्मशाला, सार्वजनिक लंगर आदि चलाना तथा और भी कई सेवा कार्य हैं, इन कार्यों के करने के लिये धन की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन देहदान एक ऐसा पुण्य है, जिसमें बिना धन के भी कई लोगों को नवजीवन दिया जा सकता है, मृत्यु के बाद शरीर तो पंचभूतों में विलीन हो जाता है, यह सब जानते हैं, लेकिन इस बात से बहुत कम लोग परिचित हैं कि यदि शरीर किसी चिकित्सा महाविद्यालय को दान कर दिया जाए तो वह चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के काम आ सकता है, मरणोपरांत शरीर के कुछ अंगों जैसे नेत्र का दान कर देने से किसी दृष्टिहीन मनुष्य ने नेत्रज्योति भी मिल सकती है।

धार्मिक मान्यताएँ में बाधक

शेष पृष्ठ २९ पर...

पृष्ठ २८ से... ऐसा नहीं कि लोग इस विषय में सोचते नहीं, लेकिन विभिन्न धर्मों की मान्यताएँ उन्हें अंत्येष्टि के मोह में देहदान करने से रोकती हैं। अंत्येष्टि नहीं हुई तो स्वर्ग अथवा मोक्ष नहीं मिलेगा, यह सोच देहदान की राह में सबसे बड़ी बाधा है, हमारे समाज में प्रचलित प्रथा है कि मरणोपरांत दाहक्रिया करने से मृत व्यक्ति को मोक्ष मिलता है, मोक्ष मिलता है या नहीं यह तो सिर्फ ईश्वर ही जानता है परंतु देहदान से होने वाले ऊपर बताए गए पुण्य कार्य से हजारों लोगों का आशीष तो जरूर मिल ही जाता है, आज समय की मांग है कि समाज के अधिक से अधिक लोग इस विषय पर मनन करें, स्वयं देहदान करें और दूसरों को

भी इस ओर प्रेरित करें।

देहदान के लिए प्रेरित करती संस्था

अनेक संस्थाएँ इस बारे में सकारात्मक कार्य करते हुए देशवासियों को लगातार प्रेरित कर रही है कि वे मरणोपरांत अपने देहदान का संकल्प लेकर मानवता के कल्याणार्थ अपना सहयोग करें, ऐसी ही एक संस्था है ''दधीचि देहदान समिति'' नई दिल्ली, इसी संस्था के प्रयत्नों एवं साध्वी ऋतुंभराजी की पावन प्रेरणा से वात्सल्य परिवार, वात्सल्य ग्राम-वृंदावन के सदस्यों ने वर्ष २०१० में सौ से अधिक संख्या में देहदान का संकल्प लिया था, इतनी बड़ी संख्या में देहदान का यह संकल्प एक कीर्तिमान था, अभी तक इनमें से तीन सदस्यों की मृत्यु पश्चात उनकी अंतिम इच्छानुसार देहदान की जा चुकी है।

गोशाला झण्डे लगे, गो-माता हर्षाय। करें गाय की वंदना, गाय बढ़ाती आय।।
गौ माता बनें राष्ट्रमाता अभियान के समर्थन का निवेदन।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

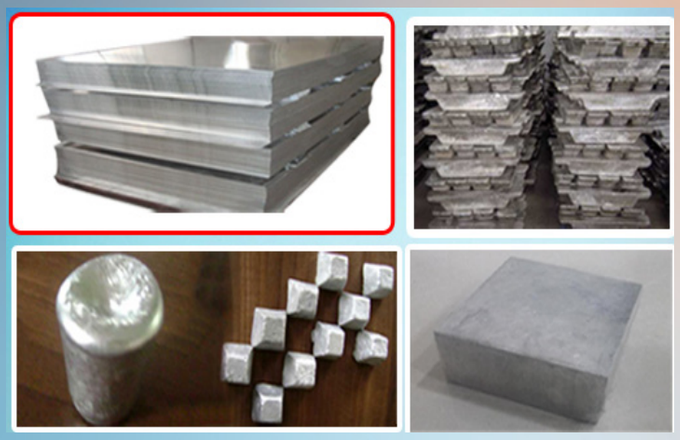

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

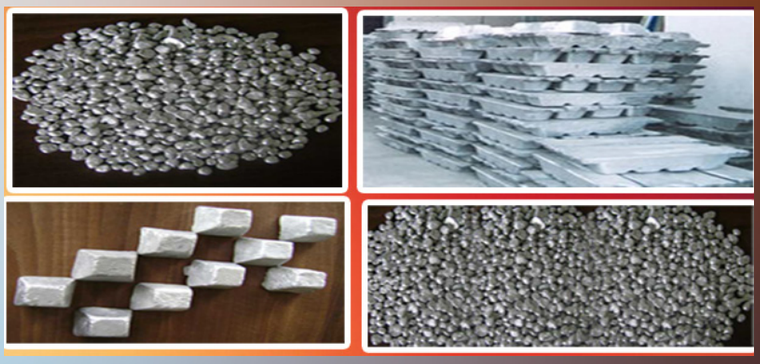

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot,
Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar,

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/294/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2024-26
Published on 19th Jun 2026 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं   पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

१५ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...

विशेष छूट
विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक
आपके घर-कार्यालय की
शोभा व ज्ञान बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं

आपके हाथों में

विशेषांक मंगवाने के लिए संपर्क करें
(समय १ दोपहर से संध्या ५.०० बजे तक)

ज्योति
9820873689

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-४०१५ ८०९४
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

मात्र ₹ १२००/-में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वार)

सम्पादक	उपसम्पादक	कार्यकारी सम्पादक
बिजय कुमार जैन	संतोष जैन 'विमल'	अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान   भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें   पर्यावरण बचाये
Remove India Name From the Constitution
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए